केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406
भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 139 गुरूवार 12 दिसम्बर 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

निजी क्षेत्र में शिक्षा और अस्पताल खुलने से मेधावियों को मिल रहे हैं अवसर– योगी आदित्यनाथ

–मां की स्मृतियों को जीवन्त बना रहा है करमा देवी शैक्षणिक समूह

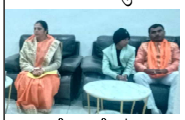

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । बुधवार को करमा देवी शैक्षणिक समूह के 15वें स्थापना दिवस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कर्मा देवी समूह के अध्यक्ष ओ.एन. सिंह को जन्म दिन का बधाई दिया। उत्कृष्ट कार्य करने वालों शिक्षको व छात्रों को प्रशस्ति पत्र दिया। उन्होने कहा कि भगवान श्रीराम का यह जन्मकारक और कार्यभूमि है। उनकी शिक्षा, दिक्षा भी यही हुयी है, जबतक मातृभूमि के प्रति समर्पण नही होगा, तबतक जीवन व्यर्थ है। जननी व जन्मभूमि के प्रति कृतज्ञता का यही भाव है। कर्मा देवी समूह ने अपनी मॉ की स्मृतियों को यहॉ जीवन्त बनाया है। पूर्ववर्ती सरकारों ने शिक्षा पर ध्यान नही दिया। वर्तमान में निजी क्षेत्र में शिक्षा और हास्पिटल खुल रहे है, जिससे गरीबो और मेधावियों को उपयुक्त अवसर मिल रहा है। अभ्युदय योजना के अन्तर्गत हमारी सरकार निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर रही है। यह योजना प्रतियोगी विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त मंच है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार में बेटियों की सुरक्षा और अराजकता तथा दंगाईयों से निपटने की समुचित व्यवस्था है। बेटिया हर क्षेत्र में निर्भय होकर आगे बढ रही है। आम आदमी अपने को सुरक्षित महसूस कर रहा है। उन्होने कहा कि व्यक्ति जब जन्म लेता है, तो पॉच तरह के ऋण माता–पिता, गुरू, मातृभूमि और देवगणों का चुकाने होते है। उन्होने कहा कि ओमनी हास्पिटल और ट्रामा सेण्टर का यहॉ शिलान्यास हुआ है, जो मॉ की स्मृतियों को दीर्घकालिक याद के लिए प्रभावी होंगा। ऐसे नर्सिग और पैरामेडिकल कालेज की पूरी दुनिया में मांग है। चीन ने कोरोना के समय धोखा दिया, हमने अपनी दवाओं से लोगों की जान बचायी तथा दूसरे देश के लोग भी यहॉ की बनी दवाओं से लाभान्वित हुए।

उन्होने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है, जब जिले व प्रदेश आत्मनिर्भर बनेंगे, तो देश भी आत्मनिर्भर बनेंगा। दुनिया की जो 100 प्रतिष्ठित कम्पनिया है, उनमें 20 सीईओ भारत देश के है। हमने हर जगह अपनी पहचान बनायी है, यहॉ की तकनीक की पहचान भी आगे बढी है। आज भारत की अर्थव्यवस्था पॉचवे स्थान पर है। उन्होने मुण्डेरवा चीनी मिल के दिवंगत किसानों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि एक सरकार ने मिल बेच दिया था, हमने बन्द चीनी मिल को चलाया। बस्ती में कोई मेडिकल कालेज नही था, हमारी सरकार ने वशिष्ठ ऋषि के नाम से महर्षि वशिष्ठ मेडिकल कालेज दिया। विधायक हर्रैया अजय सिंह के प्रयास से मखौड़ाधाम विकसित हो रहा है। तपसी आश्रम में देश के पूर्वजो के लिए आयोजित भण्डारा अद्भुत है।

उन्होने कहा कि एक व्यक्ति का स्वावलम्बन समाज व राष्ट्र का स्वावलम्बन होता है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने फार्मा उद्योग को बढावा दिया है, जिससे फार्मेसी कालेजों को काफी मदद मिलेगी। उन्होने कहा कि किसान भाई प्राकृतिक खेती की ओर लौटें। रासायनिक खादों के स्थान पर गोबर/कम्पोस्ट खाद का प्रयोग करें। गोपालन अवश्य करें, इससे हमारी धरती प्रदूषण रहित होगी तथा हम जहरयुक्त अन्न से भी बचेंगे तथा इससे एक किसान की लगभग 10 हजार रूपये की उर्वरक खर्च की बचत भी होगी। इस अवसर पर संस्थान के छात्र–छात्राओं द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक व भक्तिमय कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। संचालन प्राचार्य सौमित्र सिंह ठाकुर ने किया। जिला पंचायत अध्यक्ष संजय चौधरी, गौ सेवा आयोग उपाध्यक्ष महेश शुक्ला, जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र, विधायक हर्रैया अजय सिंह, ब्लाक प्रमुख यशकान्त सिंह, पूर्व विधायक दयाराम चौधरी व रवि सोनकर, कर्मा देवी समूह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अंशु सिंह गौतम तथा संस्थान के प्रधानाचार्य व शिक्षक–शिक्षिकाए एवं छात्र–छात्राए व जनप्रतिनिधि तथा प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

एक नजर

अज्जू हिन्दुस्थानी के परिजनों से मिले मुख्यमंत्री

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । हिंदू युवा वाहिनी के निवर्तमान जिलाध्यक्ष शशि भूषण सिंह और जिला महामंत्री विनय सिंह के नेतृत्व में करमा देवी शिक्षण संस्थान के प्रांगण में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हिन्दू युवा वाहिनी के पूर्व जिला प्रभारी स्व० अज्जू हिन्दुस्थानी के पिता, पत्नी और बेटे से मुलाकात करते हुए भावुक हुए । उन्होने उच्च अधिकारियों को निर्देशित किए कि इस परिवार को सरकार की सारी सुविधाएं मुहैया कराए, इसी बीच संगठन के पदाधिकारियों से वार्तालाप किया। वार्तालाप के दौरान संगठन से कहा इस परिवार के साथ आप लोग हमेशा बने रहिए, जो समस्या हो हमें सूचित करते रहिए परिवार की पूरी मदद होगी। स्व०अज्जू के सुपुत्र कान्हा से दुलार करते हुए खाने–पीने का समान देकर आशीर्वाद दिया और कान्हा के जनेऊ में आने का आश्वासन भी दिया।

पेंशनर्स दिवस 17 को

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । राज्य सरकार के पेंशनरों की जनपद स्तर पर समस्याओं की सुनवाई व निराकरण हेतु आगामी 17 दिसम्बर को पेंशनर्स दिवस का आयोजन अपरान्ह 1 बजे राजकीय बालिका इण्टर कालेज सभागार में किया जायेगा। उक्त जानकारी देते हुए जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने जनपद के समस्त कार्यालयाध्यक्षों को निर्देशित किया है कि पेंशनर्स दिवस में समय से उपस्थित होकर पेंशनरों की विभिन्न समस्याओं का त्वरित निराकरण करायें।

अनुदान के लिये 20 तक आवेदन करें किसान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । कृषि विभाग द्वारा संचालित सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर मेकंनाईजेशन और प्रमोशन ऑफ एग्रीकल्चर मेकंनाईजेशन फॉर इन–सीटू मैनेजमेंट ऑफ क्रॉप रेजिडयू योजना के तहत अनुदान प्राप्त करने के लिए इच्छुक किसान 20 दिसम्बर तक आवेदन कर सकते हैं। उक्त जानकारी देते हुए मण्डलायुक्त अखिलेश सिंह ने बताया है कि कृषि ड्रोन, फसल अवशेष प्रबंधन के यंत्र, कस्टम हायरिंग, सेंटर हाई टेक हब फॉर कस्टम हायरिंग और फॉर्म मशीनरी बैंक के लिए आवेदन किए जा सकते है।

17 को सम्मानित होंगे माटी कला के कारीगर

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । परिक्षेत्रीय ग्रामोद्योग अधिकारी पी.एन. सिंह ने बताया है कि खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड बस्ती मण्डल द्वारा 17 दिसम्बर मंगलवार को मण्डल स्तर पर उत्कृष्ट माटीकला के कार्य करने वाले कारीगरों को उनके उत्कृष्ट उत्पादों हेतु प्रथम, द्वितीय एंव तृतीय पुरस्कार के लिए चयन समिति द्वारा चयन किया जाएगा। उन्होने बताया कि मण्डल के प्रथम विजेता को धनराशि रू0–15000.00 द्वितीय विजेता को धनराशि रू0–12000.00 एंव तृतीय विजेता को रू0–10000.00 प्रदान किया जाएगा, समस्त कार्यक्रम जिला ग्रामोद्योग कार्यालय निकट विकास भवन बस्ती में अयोजित किया जाएगा।

अजगर पकडा गया

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। छावनी थानाक्षेत्र के माझा क्षेत्र के गांव में पेड़ पर चढ़े अजगर को देखकर ग्रामीणों के होश उड़ गए। ग्रामीणों ने वन विभाग को सूचना दिया। मौके पर रेंजर के साथ पहुंचे वन कर्मियों ने अजगर को काबू में कर पकड़ लिया। जिसके बाद ग्रामीणों ने राहत की सांस ली। विक्रमजोत ब्लाक अंतर्गत बलुवा गांव में ग्रामीणों ने झाड़ी में अजगर देख कर सूचना दी, अजगर पेड़ पर चढ़ गया। इस दौरान मौके पर काफी भीड़ जमा हो गई। मौके पर पहुंचे वन कर्मियों ने अथक परिश्रम कर अजगर को पकड़ लिया। इस दौरान क्षेत्रीय वन अधिकारी शारदानंद तिवारी, डिप्टी रेंजर राजकुमार, वन दारोगा विवेक मिश्र, वन रक्षक संतोष आदि मौजूद रहे।

खण्ड विकास अधिकारी बहादुरपुर को मिली जान से मार देने की धमकी

–अधिकारियों से लगाया सुरक्षा की गुहारः दोषियों के गिरफ्तारी की मांग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। बहादुरपुर के खण्ड विकास अधिकारी गणेश दत्त शुक्ल ने पुलिस अधीक्षक के साथ विभागीय उच्चाधिकारियों को पत्र देकर अपने और परिवार के जान माल की रक्षा के साथ ही पिपरौला बबुरहिया निवासी शैलेन्द्र दूबे पुत्र के.के. दूबे को गिरफ्तार कर न्याय दिलाने का आग्रह किया है। गणेश दत्त शुक्ल की तहरीर पर शैलेन्द्र दूबे एवं अज्ञात के विरूद्ध कलवारी पुलिस ने बी. एन.एस. की धाराओं में मुकदमा तो पंजीकृत किया है किन्तु अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं की गई है। शैलेन्द्र दूबे की धमकियों से डरे सहमे बहादुरपुर के खण्ड विकास अधिकारी गणेश दत्त शुक्ल कार्यालय तक जाने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं।

उच्चाधिकारियों को भेजे पत्र में खण्ड विकास अधिकारी गणेश दत्त शुक्ल ने कहा है कि शैलेन्द्र दूबे उन्हें धमकियां देकर मनमाना कार्य कराना चाहते हैं। गत 26 अक्टूबर को शैलेन्द्र दूबे ने बीडीओ बहादुरपुर को उनके कार्यालय में भद्दी–भद्दी गालियां दी, सीयूजी फोन ले लिया और पिस्टल दिखाकर जान से मार देने की धमकी देते हुये 20 करोड़ रूपये के पक्के कार्यों की स्वीकृति के लिये धमकाया। खण्ड विकास अधिकारी गणेश दत्त शुक्ल ने उच्चाधिकारियों से आग्रह किया है कि उनकी सुरक्षा व्यवस्था कराये जाने के साथ ही दोषियों को तत्काल प्रभाव से गिरफ्तार कर उनके विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जाय।

विद्युत विभाग में निजीकरण के विरोध में हर स्तर पर संघर्ष का संकल्प

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। राज्य विद्युत परिषद जूनियर इंजीनियर्स संगठन, शाखा बस्ती की बैठक क्षेत्रीय अध्यक्ष इं. एके उपाध्याय की अध्यक्षता में हुई। बैठक में वक्ताओं ने पूर्वांचल एवं दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के प्रस्तावित निजीकरण पर गहरी नाराजगी व्यक्त की। विभाग एवं परिवार के भविष्य को बचाने के लिए हर स्तर के संघर्ष का संकल्प लिया। केंद्रीय पर्यवेक्षक के रूप में इं. गौतम कुमार मौजूद रहे।

इं. घनश्याम यादव ने कहा कि जिन आंकड़ों के आधार पर पूर्वांचल एवं दक्षिणांचल डिस्कॉम का निजीकरण किया जा रहा है उसकी विश्वसनीयता संदिग्ध है। इं. संतोष चौधरी ने कहा कि जुलाई में कॉरपोरेशन ने सरकार को प्रस्तुत आंकड़ों में राजस्व वसूली से लेकर लाइन हानियां रोकने, बेहतर विद्युत आपूर्ति तथा बिलिंग दक्षता आदि सभी पैरामीटर में उल्लेखनीय प्रगति की बात कही थी। कुछ माह में ही विपरीत आंकड़े प्रस्तुत कर विभाग को ऋण जाल में फंसे होने की बात कहा जाना सच्चाई से परे व आंकड़ों की बाजीगरी के सिवा कुछ नहीं है।

इं. एके उपाध्याय ने कहा कि विद्युत कर्मी सीमित संसाधन एवं अपर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था में दिन–रात मेहनत कर क्षमता विस्तार, डाटा क्लीनिंग एवं बेहतर विद्युत आपूर्ति के अभूतपूर्व कार्य किए हैं, उसके सकारात्मक परिणाम आने शुरू हुए हैं।

इं. अमरनाथ ने कहा कि उड़ीसा मॉडल पर निजीकरण किया जाना एक छलावा है। कहा कि निजीकरण हुआ तो उपभोक्ता, किसान, मध्यम एवं निम्न आय वर्ग के व्यापारी महंगी बिजली खरीदने के लिए बाध्य होंगे। इं. अवधेश वर्मा ने कहा कि उड़ीसा मॉडल एक असफल प्रयोग है जहां विद्युत हानियां 20 प्रतिशत के ऊपर हैं जबकि उत्तर प्रदेश में यह 19 प्रतिशत के आसपास हैं। रिवैंप आदि योजनाओं के पूर्ण होने पर लाइन हानियां 15 प्रतिशत पर आ जाएंगी।

क्षेत्रीय सचिव इं. आशुतोष लहरी, जनपद अध्यक्ष इं. कृष्ण मोहन यादव, इं. राज कुमार, इं. अशोक चंद्र पाल इं. अवनीश गुप्ता, इं. लाल बहादुर यादव, इं. अनिल कुमार, इं. सूरज सिंह आदि मौजूद रहे।

मुण्डेरवा किसान मेले में गूंजा किसान हितों का मुद्दा पूंजीपतियों के लिये काम कर रही है सरकार– नरेश टिकैत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

मुण्डेरवा (बस्ती)। 11 दिसंबर वर्ष 2002 में पुलिस फायरिंग में मारे गए तीन किसानों की स्मृति में प्रत्येक वर्ष मुंडेरवा में आयोजित होने वाला शहीद किसान मेला इस वर्ष भी शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गया। यद्यपि किसी अनहोनी की आशंका के मद्देनजर स्थानीय कस्बा सहित प्रमुख चौराहों पर काफी संख्या में पुलिस, पीएससी और रेलवे पुलिस के जवान तथा अधिकारी तैनात रहे। भारतीय किसान यूनियन द्वारा आयोजित शहीद किसान मेला के मद्देनजर किसी भी अनहोनी से निपटने के लिए जिला प्रशासन द्वारा पर्याप्त संख्या में पुलिस, पीएससी, रेलवे पुलिस के जवान, फायर ब्रिगेड की गाड़ी, वज्र वाहन प्रमुख चौराहों से लेकर रेलवे स्टेशन व केविन पर तैनात किए गए थे।

बताते चलें कि वर्ष 2002 में पुलिस फायरिंग में मारे गए 3 किसानों में क्रमशः बद्री प्रसाद, धर्मराज उर्फ जुगानी तथा तिलक राज शहीद हो गए थे। तथा इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक सहित कई पुलिसकर्मी घायल हो गए थे इतना ही नहीं अपर पुलिस अधीक्षक की गाड़ी भी आंदोलन के दौरान जला दी गई थी। शहीद किसानों की पुण्यतिथि पर प्रत्येक वर्ष भाकियू द्वारा शहीद किसान मेला का आयोजन किया जाता है। जिसमें देश के कई प्रांतों के किसान शिरकत करते हैं ।यद्यपि एतिहातन जिला प्रशासन द्वारा भारतीय किसान यूनियन की शहीद किसान मेले को बड़ी गंभीरता से लिया जाता है किंतु शांतिपूर्ण ढंग से मेला संपन्न हो जाने पर जिला प्रशासन ने राहत की सांस ली।

वर्ष 2002 में पुलिस फायरिंग में मारे गए 3 किसान धर्मराज उर्फ जुगानी, तिलक राज, बद्री प्रसाद व घायलों के परिजनों में बृजराज, शिवदास, हरिराम ,राम भवन, श्री राम ,मुन्नू प्रसाद, राम बहौर चौधरी, बंधु चौधरी को भाकियू के पदाधिकारियों द्वारा अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया ।यद्यपि शहीद किसान के परिजनों के सम्मानित होने के बाद माहौल गमगीन हो गया। सभा के संचालन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेश टिकैत, प्रांतीय उपाध्यक्ष अनूप चौधरी, प्रांतीय सचिव दीवान चंद पटेल ने शहीद किसानों की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया ।

शहीद किसान मेला को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेश टिकैत ने कहा कि देश एवं प्रदेश सरकार की किसान विरोधी नीतियों के कारण आम किसान त्रस्त है । फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य सरकार द्वारा घोषित किया जाना चाहिए अन्यथा की स्थिति में किसान आंदोलन के लिए विवश होगा क्योंकि किसानों को लाभकारी मूल्य की जगह ओने पौने दाम पर अपनी फसल बेचने के लिए विवश होना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि किसानों के लंबे संघर्ष के बाद ही सरकार ने तीन काले कानूनों को वापस तो लिया लेकिन आज तक फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित नहीं किया जिसके कारण किसानों का मोह कृषि से भंग होता जा रहा है। कहने के लिए तो सरकार किसानों के उत्थान की बातें तो करती हैं जबकि वास्तविक धरातल पर स्थितियां इसके विपरीत है ।

उन्होंने कहा कि सरकार उद्योगपतियों के इशारे पर कार्य कर रही है और जब सरकार को उद्योगपति चलाएंगे तो किसानों और मजदूरों को दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि किसान यूनियन संगठन को एकजुट रहने की जरूरत है जब संगठन में एकता रहेगी तभी किसानों की मांगों पर सरकार गंभीरता पूर्वक विचारकरेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार स्मार्ट मीटर लगाकर किसानों का शोषण करना चाहती है जो किसान यूनियन बर्दाश्त नहीं करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा कौड़ियों के भाव किसानों की जमीन हड़पना चाहती है जबकि सर्किल रेट से 10 गुना अधिक दस गुना अधिक मुआवजा दिया जाना चाहिए। कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा 410 रुपया प्रति कुंतल गन्ना मूल्य का भुगतान किया जा रहा है जबकि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा महज 370 गन्ना मूल्य का भुगतान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि तीन काले कानूनों की वापसी हमारी जीत नहीं है हमारी जीत तब होगी जब सरकार फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करते हुए कानून बनाएगी । उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा जहरीले फसलें उगाई जा रही है जो आम जनमानस के हित में उचित नहीं है। इसी क्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बलराम सिंह लम्बरदार ने कहा कि सरकार किसान विरोधी है क्योंकि सरकार ने अपने घोषणा पत्र के मुताबिक किसानों के हित में कार्य नहीं किया ।उन्होंने कहा कि मुन्डेरवा चीनी मिल द्वारा राख कैप्चर मशीन न चलाएं जाने के कारण पूरे क्षेत्र में राख उड़ रही है जिससे आम लोग परेशान हैं। इस पर तत्काल प्रशासन रोक लगाई अन्यथा प्ररिणाम गंभीर होगा । उन्होंने कहा कि पूंजीपतियों के इशारे पर सरकार कार्य कर रही है जिसका परिणाम है कि सरकार कंपनी के माध्यम से किसानों की खेती कराना चाहती है। कहा कि मुनाफाखोरी के लिए तीन काले कानूनों किसानों के विरोध में लाए गए थे किंतु किसानों की एकता के कारण ही सरकार को तीन काले कानूनों को वापस लेना पड़ा। उन्होंने कहा कि आंदोलन के दौरान हर घर से एक किसान निकले तभी उनकी मांगें मानी जाएंगी। इसी क्रम में राष्ट्रीय महासचिव राजवीर सिंह जादौन ने कहा कि सरकार ने किसान उत्पादित फसलों का मूल्य लागत के अनुसार निर्धारित नहीं कर रही है जिसके कारण किसान परेशान है। उन्होंने कहा कि सरकारी कर्मचारियों के वेतन में बेतहाशा वृद्धि की गई है। जबकि वही दूसरी तरफ किसानों की फसलों का वाजिब मूल्य नहीं दिया जा रहा। उन्होंने कहा कि फसलों की सुरक्षा की जिम्मेदारी के दायित्व का निर्वहन सरकार द्वारा नहीं किया जा रहा है अलबत्ता प्रदेश सरकार द्वारा फसलों के सुरक्षा घेरा में तार लगाने पर भी पाबंदी लगा दी गई। उन्होंने कहा कि किसान अपने घरों में मीटर न लगाए और इसका पुरजोर विरोध करें। उन्होंने कहा कि महात्मा महेंद्र सिंह टिकैत व चौधरी दीवान चंद चौधरी के मूर्ति स्थापना के लिए प्रशासन तत्काल जगह दे अन्यथा परिणाम गंभीर होगा। इसी क्रम में पूर्वांचल अध्यक्ष अनूप चौधरी ने कहा कि केंद्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा किसानों की उपज का लाभकारी मूल्य नहीं दिया जा रहा है कहा कि बढ़ी हुई लागत और महंगाई के अनुसार गन्ना मूल्य ₹500 प्रति कुंतल घोषित किया जाना चाहिए उन्होंने कहा कि अगर पूर्वांचल की बंद पड़ी चीनी मिले प्रदेश सरकार द्वारा चालू नहीं की गई तो भाकियूद्वारा व्यापक आंदोलन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जहां भगवान के बाद किसान का दूसरा रूप माना जाता था और उसकी गणना नंबर एक पर होती थी वहीं दूसरी तरफ वर्तमान समय में नंबर एक के स्थान पर चार पर हो रही है। इसी क्रम में प्रदेश सचिव दीवान चंद पटेल ने कहा कि देश प्रदेश की हालत खराब है और किसानों की चिंता सरकारों द्वारा नहीं की जा रही है जिसके परिणाम स्वरूप किसानों की स्थिति बदतर होती जा रही है। उन्होंने कहा कि महात्मा महेंद्र सिंह टिकट व स्वर्गीय दीवान चंद चौधरी की मूर्ति रखी हुई है किंतु प्रशासन द्वारा जगह नहीं दिया जा रहा। उन्होंने राष्ट्रीय मुखिया से मुख्यमंत्री से वार्ता कर जमीन उपलब्ध कराने की मांग की ।इसी क्रम में बस्ती सदर विधायक महेंद्र यादव ने कहा कि किसानों की खुशहाली से देश तरक्की करेगा तो वर्तमान समय में स्थितियां विपरीत है । उन्होंने कहा कि किसान आंदोलन के कारण ही मुन्डेरवा चीनी मिल चली ।इसी क्रम में पूर्वांचल के वरिष्ठ उपाध्याक्ष शोभाराम ठाकुर ने कहा किसानों की तरक्की की बात सिर्फ कागजों में है उन्होंने कहा कि वाल्टरगंज चीनी मिल मार्च 18 में बंद हुई फिर भी प्रदेश सरकार ने अपने घोषणा के मुताबिक किसानों का बकाया गन्ना मूल्य भुगतान नहीं किया ।। इस दौरान प्रदेश उपाध्यक्ष राम किशोर पटेल व सुभाष चंद्र किसान, प्रदेश सचिव राम सिंह जगराम चौधरी जयराम वर्मा, गौरीशंकर चौधरी, महेंद्र कुमार चौधरी, रामसागर चौधरी, जनार्दन मिश्रा परमात्मा चौधरी, चंद्रप्रकाश, सूर्य प्रकाश सिंह, ब्रह्मा दिन किसान जनार्दन मिश्रा,डा0आर 0पी सहित तमाम लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन मंडल उपाध्यक्ष पंचराम चौधरी ने किया।

जस्टिस शेखर यादव के खिलाफ महाभियोग लाने की तैयारी

नई दिल्ली (आभा)। विपक्षी दलों ने विवादास्पद टिप्पणी करने वाले इलाहाबाद हाई कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति शेखर यादव के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाने संबंधी नोटिस देने की मुहिम शुरू कर दी है और इसके लिए सांसदों के हस्ताक्षर लिए जा रहे हैं।

कांग्रेस सांसद विवेक तन्खा ने बुधवार को बताया कि अब तक राज्यसभा के 30 से अधिक सदस्यों के हस्ताक्षर ले लिए गए हैं और संसद के वर्तमान शीतकालीन सत्र में ही इसके लिए नोटिस दिया जाएगा।

उन्होंने कहा, ''यह गंभीर मामला है। हम संसद के इसी सत्र में महाभियोग के लिए नोटिस देंगे।''

न्यायमूर्ति शेखर यादव ने रविवार को इलाहाबाद हाई कोर्ट में विश्व हिंदू परिषद के एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए विवादास्पद टिप्पणी की थी। प्रस्ताव से जुड़ा नोटिस 100 लोकसभा सदस्यों या 50 राज्यसभा सदस्यों द्वारा पेश किया जाना चाहिए।

राज्यसभा सदस्य और वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने मंगलवार को कहा था कि महाभियोग प्रस्ताव का नोटिस दिया जाएगा। उन्होंने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा था, ''कोई भी न्यायाधीश इस तरह का बयान देता है तो वह अपने पद की शपथ का उल्लंघन करता है। अगर वह पद की शपथ का उल्लंघन कर रहा है, तो उसे उस कुर्सी पर बैठने का कोई अधिकार नहीं है।''

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेंडेल फिलिप्स

दैनिक भारतीय बस्ती

बस्ती 12 दिसम्बर 2024 गुरूवार

सम्पादकीय

बदलते जीवन शैली का संकट

यह मौजूदा वक्त की विडंबना है कि आय बढ़ने के साथ लोगों ने घर में बने खाने की बजाय डिब्बाबंद प्रसंस्कृत खाने को तरजीह देना शुरू कर दिया है। सूचना माध्यमों के जरिये तुरत–फुरत के खाने के विज्ञापनों का इतने आक्रामक ढंग से प्रचार किया जाता है कि बच्चे क्या, बड़े भी डिब्बाबंद खाने के मुरीद होने लगते हैं। यह जानते हुए कि यह उनकी सेहत पर भारी है। जब घर के बड़े–बुजुर्ग इससे बचाव की सलाह देते हैं तो वे इसे पुरातनपंथी सोच करार दे देते हैं। लेकिन डिब्बाबंद खाने की मुहिम चलाने वाले पश्चिमी देशों को भी अब अहसास हो चला है कि डिब्बाबंद खाने से समय से पहले बुढ़ापा दस्तक देने लगता है। खानपान की पश्चिमी संस्कृति के वाहक इटली में हुए एक शोध ने विकसित देशों को भी नींद से जगाया है। दरअसल, इटली के इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोलॉजी के एक हालिया शोध ने फिक्र बढ़ाने वाला निष्कर्ष दिया है कि डिब्बाबंद भोजन के जरूरत से ज्यादा सेवन से व्यक्ति का शरीर समय से पहले बूढ़ा हो जाता है। वैज्ञानिकों ने बताया है कि इसके सेवन से हमारे शरीर की कोशिकाएं और ऊतक समय से पहले वृद्ध होने लगते हैं। यदि कोई व्यक्ति बहुत ज्यादा ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करता है तो बुढ़ापा जल्दी आएगा। इस शोध में करीब साढ़े बाइस हजार लोगों को शामिल किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि अधिक मात्रा में जंक फूड व प्रसंस्कृत भोजन का उपभोग करने वाले लोगों की जैविक उम्र अधिक दर्ज की गई। वैज्ञानिकों का दावा है कि हमारे खाने में शामिल प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ के मुक्त कण अन्य स्वस्थ अणुओं के विरुद्ध प्रतिक्रिया देते हैं। चिंता की बात यह है कि ये न केवल डीएनए व आरएनए बल्कि प्रोटीन को भी नुकसान पहुंचाते हैं। जिससे समय से पहले ही शरीर की कोशिकाएं मरने लगती हैं। अंततः शरीर समय से पहले बूढ़ा होने लगता है।

वहीं आशंका जतायी जा रही है कि रासायनिक पदार्थों द्वारा संरक्षित डिब्बाबंद खाना हमारे शरीर में सूजन भी पैदा कर सकता है। इतना ही नहीं कालांतर व्यक्ति मोटापा, हृदय रोग, दूसरी श्रेणी के मधुमेह व गठिया जैसे रोगों का भी शिकार हो सकता है। दरअसल, खाद्य पदार्थों का बाजार चलाने वाली कंपनियों की कोशिश होती है कि खाने को देर तक संरक्षित किया जाए। खाद्यान्न को प्रसंस्कृत करने के लिये सुरक्षित रखने वाले रासायनिक पदार्थों व सोडियम का भरपूर इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा अधिक मात्रा में चीनी तथा शरीर के लिये नुकसानदायक रसायन, वसा व कार्बोहाइड्रेट भी खाने को देर तक चलने लायक बनाने के लिये इस्तेमाल किए जाते हैं। जो आखिरकार हमारी सेहत से खिलवाड़ ही करते हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ कंपनियां अधिक मात्रा में स्टार्च का भी प्रयोग करती हैं। ये कालांतर शरीर में शूगर बढ़ने से मधुमेह का खतरा पैदा कर सकती हैं। अधिक तेल भी सेहत के लिये घातक होता है। सेहत वैज्ञानिक लंबे अरसे से कहते रहे हैं कि डिब्बाबंद खाना व जंकफूड शरीर में मोटापा बढ़ाता है। दरअसल, इसमें विद्यमान ट्रांस फैट कालांतर शरीर में कोलेस्ट्रॉल को बढ़ा देता है। इससे बाद में कई तरह के रोग पैदा हो जाते हैं। विशेषकर दिल के रोगों के लिये यह घातक साबित हो सकता है। एक अध्ययन बताता है कि हाल के वर्षों में भारतीयों के खाने में डिब्बाबंद भोजन का हिस्सा बढ़ा है। एक भारतीय रिपोर्ट इस बात की पुष्टि करती है कि नई पीढ़ी घरों में खाना बनाने के बजाय डिब्बाबंद खाने को तरजीह दे रही है। जो कालांतर गैर संक्रामक रोगों को ही बढ़ावा देता है। विडंबना यह कि मां–बाप के मना करने के बावजूद नई पीढ़ी के किशोर व बच्चे डिब्बाबंद खाने और फास्ट फूड को अपना मुख्य भोजन बना रहे हैं। यही वजह है कि बड़ी उम्र में होने वाले लाइफस्टाइल के रोग अब बच्चों व किशोरों में भी होने लगे हैं। निश्चित ही इटली में हुआ शोध हमारी आंख खोलने वाला होना चाहिए। लोगों को डिब्बाबंद भोजन से परहेज करने के लिये जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है।

यूपी में बदलते सियासी समीकरण

—अजय कुमार—

उत्तर प्रदेश में बीजेपी के खिलाफ एक बार फिर से सियासी समीकरण काफी तेजी के साथ बदल रहा हैं। प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी और योगी सरकार की विरोध की हांडी नहीं पक पाने के कारण प्रदेश में एक बार फिर से नए सियासी समीकरण उभरते नजर आ रहे हैं। इस नये समीकरण में तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्ष ममता बनर्जी का अहम रोल हो सकता है। इसी वजह से समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन की कमान ममता बनर्जी को दिये जाने की मांग का भी समर्थन कर रहे हैं। हो सकता है 2027 के विधानसभा चुनाव के समय तक समाजवादी पार्टी कांग्रेसी पंजे से अपना हाथ छुड़ाकर ममता बनर्जी के कहने पर एक बार फिर से मायावती के सात बुआ भतीजे वाला रिश्ता निभाते नजर आए। ऐसा होता है तो यूपी में कांग्रेस को बड़ा झटका लग सकता है। यह संभावना है इसलिए बढ़ रही है क्योंकि पिछले कुछ दिनों या महीनों से कांग्रेस समाजवादी पार्टी के मुस्लिम वोट बैंक में सेंधमारी की कोशिश कर रही है। सपा–कांग्रेस के बीच दूरियां लगातार बढ़ने के साथ एक–दूसरे के खिलाफ सार्वजनिक मंचों से बयानबाजी भी हो रही है। महाराष्ट और हरियाणा के चुनाव में कांग्रेस की नाकामी भी इसमें एक अहम कड़ी समझा जा रहा है। यही दूरियां ही हैं कि संसद के अंदर भी सपा–कांग्रेस विभिन्न मुद्दों पर मजबूती से एक साथ नहीं दिख रहे हैं।सपा नेताओं का कहना है कि संभल मामले में उसके सांसद पर मुकदमे दर्ज किए जाने का कांग्रेस ने उस तरह विरोध नहीं किया जैसी उससे अपेक्षा थी। बताते हैं कि लोकसभा में फैजाबाद (अयोध्या) के सपा सांसद अवधेश प्रसाद की सीट पीछे होने पर भी दोनों दलों के रिश्तों में दरार आई है। सपा का मानना है कि सीटिंग प्लान पर बात के समय कांग्रेस ने उसे भरोसे में नहीं लिया। वहीं, कांग्रेस सूत्रों का कहना है कि सदन में अदाणी मामले में उसे सपा का अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा है। हाल यह है कि जेल में बंद सपा के कद्दावर नेता और पूर्व मंत्री आजम खान ने भी इंडिया ब्लॉक को जेल से एक संदेश भेजा है। इसमें उन्होंने कहा है कि इंडिया ब्लॉक को मुसलमानों पर हो रहे हमलों पर अपनी नीति स्पष्ट करनी चाहिए। साथ ही उन्होंने समाजवादी पार्टी को भी लिखा कि संभल की घटना के जैसे ही रामपुर में हुए अत्याचार का मुद्दा भी संसद में उतनी ही मजबूती से उठाना चाहिए।

कांग्रेस और सपा के बीच दूरियां तब और बढ़ गईं जब सपा कि तरफ से कहा जाने लगा कि इंडिया गठबंधन का नेतृत्व कांग्रेस की जगह तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो ममता बनर्जी को दिए जाने पर सपा को एतराज नहीं है। बता दें लोकसभा चुनाव के बाद कई चुनावों में कांग्रेस की लगातार हार के बाद इंडिया गठबंधन में अंतर्विरोध बढ़ रहे हैं। उधर दूसरी तरफ चर्चा यह भी है कि यूपी की राजनीति एक बार फिर पलट सकती है। सपा और कांग्रेस के बीच आई दूरियों के बीच मायावती का रुख नई राजनीतिक समीकरणों को जन्म दे सकता है। बहराल,सपा नेताओं का कहना है कि संभल मामले में उसके सांसद पर मुकदमे दर्ज किए जाने का कांग्रेस ने उस तरह विरोध नहीं किया जैसी उससे अपेक्षा थी। बताते हैं कि लोकसभा में फैजाबाद (अयोध्या) के सपा सांसद अवधेश प्रसाद की सीट पीछे होने पर भी दोनों दलों के रिश्तों में असहजता पैदा हुई है। सपा का मानना है कि सीटिंग प्लान पर बात के समय कांग्रेस ने उसे भरोसे में नहीं लिया। वहीं, कांग्रेस सूत्रों का कहना है कि सदन में अदाणी मामले में उसे सपा का अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा है। रिश्तों में खटास का ही नतीजा है कि सपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष किरणमय नंदा ने कहा कि ममता बनर्जी वरिष्ठ नेता हैं। पार्टी हाईकमान भी यही चाहता है कि इंडिया गठबंधन का नेतृत्व ममता बनर्जी करें। सपा के प्रमुख महासचिव प्रो. रामगोपाल भी कह चुके हैं कि वे राहुल गांधी को इंडिया गठबंधन का नेता नहीं मानते हैं। इंडिया गठबंधन की समन्वय समिति में शामिल सपा के एक नेता बताते हैं कि कांग्रेस गठबंधन को लेकर गंभीर नहीं है। उसके नेता चुनाव के वक्त ही सक्रिय होते हैं जिससे जनाधार नहीं बढ़ता। ऐसे में बेहतर होगा कि गठबंधन का नेतृत्व ममता बनर्जी करें। भाजपा को मात देने के लिए रणनीति के साथ जनता के बीच लगातार जुटे रहने की जरूरत है।

बात बीएसपी की की जाए तो हरियाणा व महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव और यूपी के उपचुनाव में कांग्रेस व सपा के बीच बढ़ी दूरियों का सियासी लाभ बसपा को मिलने की उम्मीद है। पार्टी तेजी से बदले राजनीतिक घटना पर नजर बनाए हुए है। यदि कांग्रेस और सपा के बीच बात नहीं बनी तो इसकी वजह से बनने वाले तीसरे मोर्चा का बसपा अंग बन सकती है। जानकारों की मानें तो वर्तमान में पार्टी को अपना वजूद बचाने और देश की राजनीति में अपनी प्रासंगिकता को बरकरार रखने के लिए इसकी जरूरत भी है। बसपा के इतिहास पर नजर डालें तो वर्ष 2007 के यूपी विधानसभा चुनाव में उसे बहुमत मिला था। इससे पहले बसपा दूसरे दलों की मदद से सरकार बनाती रही, जिसका लाभ उसे लोकसभा चुनावों में भी मिलता गया। वर्ष 2012 में बसपा ने फिर अकेले दम पर चुनाव लड़ने का फैसला लिया, जो गलत साबित हुआ। यही हाल 2017 के विधानसभा चुनाव में भी हुआ। 2019 में बसपा ने सपा के साथ गठजोड़ कर लोकसभा चुनाव लड़ा और 10 सांसदों वाली पार्टी बनी। हालांकि इसके बाद वर्ष 2022 का विधानसभा चुनाव और 2024 का लोकसभा चुनाव अकेले लड़ने से उसे भारी नुकसान का सामना करना पड़ गया। अब पार्टी की उम्मीदें तीसरा मोर्चा बनने पर टिकी हैं। वैसे तो मायावती सपा के साथ मिलकर चुनाव लड़ने को तैयार नहीं है लेकिन पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी दोनों दलों को एक मंच पर ला सकती हैं। राजनीतिक विश्लेषकों की मानें तो कांग्रेस को दरकिनार कर अगर तीसरा मोर्चा बना तो ममता बनर्जी उसकी निर्विवाद नेता बन सकती हैं। पहले उन्हें मायावती से चुनौती मिलने के जो समीकरण बने थे, वो बीते चुनावों में बसपा के लगातार घटते जनाधार की वजह से ध्वस्त हो चुके हैं। अब बसपा को अपना खोया हुआ जनाधार वापस पाने के लिए दूसरे दलों का सहारा लेना पड़ सकता है।इसके साथ ही बसपा सुप्रीमो ने पुराने बसपाइयों को भी वापस आने का बुलावा दिया है।

राजनीति की नयी डगर पर प्रियंका गांधी

—निर्मल रानी—

देश में पिछले दिनों जहाँ महाराष्ट्र व झारखण्ड में विधानसभा चुनाव संपन्न हुये वहीं विभिन्न राज्यों की कई सीटों पर विधानसभा व लोकसभा उपचुनाव भी कराये गये। इन्हीं में एक केरल की वायनाड संसदीय सीट भी थी जिस पर 2024 के आम चुनावों में राहुल गाँधी रायबरेली के साथ साथ वायनाड से भी विजयी हुये थे। बाद में राहुल को वायनाड सीट छोड़कर रायबरेली की सीट अपने पास रखनी पड़ी। राहुल ने यहाँ 6,47,445 वोट प्राप्त करके 3,64,422 के अंतर से भारी जीत हासिल की थी। इसी सीट पर हुये उपचुनाव में कांग्रेस ने प्रियंका गाँधी को पहली बार लोकसभा चुनाव में उतारा। प्रियंका को यहाँ राहुल गाँधी से भी अधिक मत हासिल हुये और उन्होंने 4 लाख से अधिक वोटों के अंतर से ऐतिहासिक जीत हासिल की। जिस समय प्रियंका की शानदार जीत व संसदीय राजनीति में उनके सक्रिय व अधिकृत प्रवेश की पटकथा वायनाड की जनता लिख रही थी उस समय देश का श्गोदी मीडिया श केवल महाराष्ट्र के चुनाव परिणामों को महिमामंडित करने में लगा था।

गौर तलब है कि अपने व्यक्तित्व में अपनी दादी इंदिरा गांधी के दर्शन का एहसास कराने वाली प्रियंका गांधी को पहली बार इतने भारी मतों से उस केरल राज्य के लोगों ने चुना है जोकि देश का सबसे शिक्षित राज्य है। और भरतीय जनता पार्टी तमाम प्रयासों के बावजूद यहाँ अपनी दाल गला नहीं पाती। केरल के लोग भाजपा को वोट क्यों नहीं देते इसपर कांग्रेस या विपक्ष क्या कहता है उससे ज्यादा अहमियत इस बात की है कि स्वयं भाजपा इस बारे में क्या सोचती है। इस विषय पर जब मार्च 2021 में केरल भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व केरल भाजपा के अध्यक्ष रहे वरिष्ठ नेता राजागोपाल से पूछा गया कि बीजेपी केरल में अपनी राजनीतिक जमीन क्यों नहीं तैयार कर पाती। इस प्रश्न के उत्तर में राजगोपल ने कहा, श्श्केरल अलग तरह का प्रदेश है। दो–तीन प्रमुख कारण हैं। एक तो यह कि केरल की साक्षरता दर 90 प्रतिशत है। यहां के लोग सोचते हैं, तार्किक हैं। ये शिक्षित लोगों की आदतें हैं। दूसरी बात यह कि केरल में 55 प्रतिशत हिंदू हैं और 45 प्रतिशत अल्पसंख्यक हैं। हर कैलकुलेशन में ये चीज आती है। ऐसे में केरल की तुलना किसी और राज्य से नहीं की जा सकती है। केरल भाजपा नेता राजागोपाल द्वारा पेश की गयी इसी थ्योरी को यदि उलट दिया जाये तो समझा जा सकता है कि भाजपा जिन राज्यों में अपना जनाधार बढ़ा रही है उसकी दरअसल वजह क्या है।

बहरहाल केरल की शिक्षित जनता ने पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ने वाली गाँधी – नेहरू परिवार की बेटी को वायनाड से रिकार्ड विजयश्री दिलवाकर अपना मंतव्य स्पष्ट कर दिया कि देश की शिक्षित व तर्कपूर्ण जनता को गाँधी – नेहरू परिवार की इस बेटी से काफी उम्मीदें जुड़ी हुई हैं। निश्चित रूप से प्रियंका गाँधी ने न केवल दादी इंदिरा गाँधी व पिता राजीव गाँधी के साथ लंबे समय तक प्रधानमंत्री निवास में रहकर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के गुण सीखे हैं बल्कि पिता राजीव मां सोनिया व भाई राहुल गाँधी के चुनावों में अहम भूमिका निभाकर चुनावी राजनीति में भी पूरी महारत हासिल की है। राहुल गाँधी ने यूँही नहीं कहा था कि यदि प्रियंका 2024 के लोकसभा चुनाव में वाराणसी से नरेंद्र मोदी के विरुद्ध चुनाव लड़तीं तो निश्चित रूप से वे मोदी को पराजित कर देतीं। क्योंकि 2019 में जिस वाराणसी में नरेंद्र मोदी ने 4 लाख 79 हजार वोटों के भारी अंतर से जीते दर्ज की थी वह अंतर इस बार घटकर 1 लाख 52 हजार रह गया है। यहाँ मोदी के विरुद्ध कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने वाले अजय राय को 4 लाख 60 हजार वोट मिले थे। इस लिहाज से वाराणसी से मोदी के विरुद्ध प्रियंका की उम्मीदवारी देश की राजनीति की एक नई पटकथा लिख सकती थी।

अपनी जीत के बाद पहली बार प्रियंका गांधी ने जिन शब्दों में मतदाताओं का आभार व्यक्त किया वह भी काबिल– ए – तारीफ थे। उन्होंने कहा कि 'आपने मुझ पर जो भरोसा जताया है, उसके लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूं। मैं यह सुनिश्चित करूंगी कि समय के साथ, आपको वास्तव में यह महसूस हो कि यह जीत आपकी जीत है और जिस शख्स को आपने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना है वह आपकी उम्मीदों और सपनों को समझता है और आपके लिए लड़ता है। मैं संसद में आपकी आवाज बनने के लिए उत्सुक हूं।' निश्चित रूप से देश की जनता भी भारतीय संसद में प्रियंका गाँधी की आवाज उनका अंदाज तथा उनके द्वारा देशहित में उठाये जाने वाले मुद्दों को सुनने के लिये बेहद उत्सुक है। गत लगभग दो दशक से प्रियंका गाँधी ने कांग्रेस पार्टी के चुनाव प्रचार में अपनी जिस क्षमता व दक्षता का परिचय दिया है उससे कांग्रेस को भी लाभ हुआ है और कांग्रेस जनों में भी उत्साह का संचार हुआ है।

प्रियंका गाँधी का संसदीय राजनीति में प्रवेश ऐसे समय में हुआ है जबकि सत्तरूढ़ भाजपा साम दाम दंड भेद सभी तरीके अपनाकर सत्ता में बने रहना चाहती है तथा अपने अघोषित अतिवादी एजेंडे पर चलकर अपने सपनों का बहुसंख्यवादी भारत बनाना चाह रही है। जबकि कांग्रेस गाँधी के सपनों के भारत के निर्माण की पक्षधर है। कांग्रेस संविधान व लोकतंत्र की रक्षा की बात करती है। जबकि भाजपा के कई नेता संविधान बदलने की बातें करते रहे हैं। उधर इण्डिया गठबंधन भी 2024 में अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद क्षेत्रीय नेताओं के स्वार्थवश मजबूत विपक्ष की भूमिका अदा नहीं कर पा रहा। ऐसे में ले देकर कांग्रेस पार्टी से ही देश को न केवल मजबूत विपक्ष देने की उम्मीदें बंधी हुई हैं बल्कि सत्य अहिंसा व धर्मनिरपेक्ष भारत के निर्माण की आस भी केवल कांग्रेस पार्टी से ही है। राहुल गाँधी निश्चित रूप से अपनी क्षमता से अधिक मेहनत कर सत्ता से मुकाबला करने से लेकर पार्टी को मजबूत बनाने तक के लिये काफी काम कर रहे हैं। परन्तु उनके विरुद्ध सत्तधारी तरह तरह की साजिशें रचकर उन्हें राजनैतिक परिदृश्य से ओझल करने तक की योजना बनाये बैठे हैं।

जिस तरह पूर्व में प्रियंका गाँधी ने महिलाओं की सुरक्षा के हक में आवाजें बुलंद की हैं ,कानून व्यवस्था के मुद्दे उठाये हैं दलितों,किसानों व गरीबों के लिये आवाज उठाई है उसी वर्ग को प्रियंका गाँधी के लोकसभा पहुँचने से काफी उम्मीदें जुड़ी हुई हैं। माना जा सकता है कि प्रियंका समाज के शोषित व पीड़ित समाज की आवाज तो बनेंगी ही साथ ही राजनीति में अब एक नई इबारत भी लिखेंगी।

बीच बहस में मंदिर–मस्जिद

—अभिनय आकाश—

वैसे तो उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में अभी दो साल का वक्त शेष है। लेकिन विभिन्न मस्जिदों और स्थलों पर अधिकारों के दावें आए दिन देखने को मिल रहे हैं। मामला स्थानीय अदालतों से शुरु होते हुए विभिन्न कोर्ट तक पहुंच भी रहा है। जिसने सूबे के सियासी पारा को भी गर्म कर दिया है। तीन याचिकाएं हाल के हफ्तों में उत्तर प्रदेश में दायर की गई हैं, जबकि अजमेर शरीफ दरगाह में सर्वेक्षण की मांग करते हुए एक याचिका राजस्थान में अजमेर अदालत में दायर की गई है। वहीं दिल्ली के जामा मस्जिद को लेकर हाई कोर्ट में अहम सुनवाई है। जामा मस्जिद के आसपास के क्षेत्र का सर्वेक्षण करवाने और अतिक्रमण को हटाने की मांग वाला याचिकाओं से जुड़ा एक मामला पर सुनवाई होगी।

19 नवंबर को यूपी के चंदौसी कोर्ट में एक याचिका दायर कर संभल की शाही जामा मस्जिद पर हिंदू अधिकार का दावा किया गया। अदालत ने उसी दिन मस्जिद के सर्वेक्षण का आदेश दिया, और प्रशासन ने शाम तक यह सर्वेक्षण भी कर लिया। संभल में जब से जामा मस्जिद में हरी मंदिर होने का दावा किया गया है, उसके बाद से संभल तीर्थ नगरी के कई सबूत सामने आए हैं। संभल में प्राचीन मंदिर की परिक्रमा पर बने सबूत सामने आए थे। ऐसे कई मंदिर आज भी संभल में मौजूद हैं। वहीं संभल प्रशासन ने इन मंदिरों का जीणोर्धार शुरू कर दिया है। संभल के मंदिरों का स्वरूप बिल्कुल वैसा ही करने की प्लानिंग है जैसा आक्रांताओं के अत्याचार से पहले हुआ करता था।

24 नवंबर को मस्जिद के दूसरे सर्वेक्षण के दौरान हिंसा भड़क गई थी जिसमें कम से कम चार लोग मारे गए थे। तब से बदायूँ में शमशी शाही मस्जिद के साथ–साथ जौनपुर में अटाला मस्जिद पर समान दावे करने वाली अदालतों में दायर याचिकाओं में डेवलपमेंट भी देखने को मिला है। विपक्ष ने निचली अदालतों द्वारा इन याचिकाओं को स्वीकार करने के तरीके और राज्य प्रशासन द्वारा अपने आदेशों को लागू करने में दिखाई गई तत्परता पर नाराजगी जताई है।

सुप्रीम कोर्ट ने अब पूजा स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम, 1991 की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली लंबित याचिकाओं की सुनवाई के लिए एक विशेष पीठ का गठन किया है, जो यह निर्धारित करती है कि पूजा स्थलों को छोड़कर सभी पूजा स्थलों की प्रकृति अयोध्या में जो उस समय मुकदमेबाजी के अधीन था, उसे वैसे ही बनाए रखा जाएगा जैसा वह 15 अगस्त, 1947 को था। वाराणसी में ज्ञानवापी मस्जिद और मथुरा में ईदगाह मस्जिद पर हिंदू अधिकारों की मांग करने वाली याचिकाएं 2021 में दायर की गईं।

नई याचिकाओं के मद्देनजर राजनीतिक प्रभाव और परिणामी ध्रुवीकरण से आदित्यंथ की हिंदुत्व राजनीति के ब्रांड को बढ़ावा मिल सकता है, जिसे कई लोग भाजपा की मानक लाइन से अधिक आक्रामक मानते हैं। गोरखपुर में गोरक्षनाथ मठ, जिसके प्रमुख आदित्यनाथ हैं, अयोध्या आंदोलन से निकटता से जुड़ा हुआ था, जिसकी परिणति शीर्ष अदालत के 2019 के फैसले के मद्देनजर जनवरी 2024 में राम मंदिर के निर्माण में हुई थी। 2025 की शुरुआत में यूपी का प्रयागराज भी महाकुंभ की मेजबानी करेगा, जिसे सबसे बड़ा हिंदू सांस्कृतिक आयोजन माना जाता है। इस कार्यक्रम को समावेशी बनाने के लिए सीएम पहले ही आरएसएस के शीर्ष अधिकारियों से संपर्क कर चुके हैं, जहां हिंदू समाज की सभी जातियों और संप्रदायों का प्रतिनिधित्व किया जा सके। इसे हिंदुत्व नेता के रूप में अपनी राष्ट्रीय छवि को बढ़ावा देने के लिए आदित्यनाथ की कोशिश के रूप में भी देखा गया है।

कानून–व्यवस्था, शासन और कल्याण के कॉम्बिनेशन में हिंदुत्व का तड़का महाराज जी (आदित्यनाथ) की राजनीति को सही रफ्तार दे रहा है। लेकिन हिंदुत्व वह आधार है जिस पर बाकी सब चीजें बनी हैं। विपक्ष ने (2024 के लोकसभा चुनावों में) कम से कम यूपी में दिखा दिया है कि वो सोशल इंजीनियरिंग के मामले में कितनी कुशल है। यूपी बीजेपी के एक नेता ने कहा कि ऐसे समय में जब विपक्ष समाज को जाति के आधार पर बांटने पर आमादा है, हमें हिंदुत्व को और आगे बढ़ाना होगा। इस बात से इनकार करते हुए कि सरकार का याचिकाओं से कोई लेना–देना है, उन्होंने यह भी दावा किया कि वे (याचिकाकर्ता) सभी व्यक्ति हैं जो न तो भाजपा से जुड़े हैं और न ही संघ परिवार से। सारे मामले अदालतों में हैं। लेकिन अगर कोर्ट के आदेश के बावजूद दूसरा पक्ष परेशानी पैदा करता है तो योगी सरकार के तहत कार्रवाई होना तय है।

याचिकाओं पर विपक्षी पार्टियों की ओर से भी अलग–अलग प्रतिक्रियाएँ सामने आई हैं। यूपी में प्रमुख विपक्ष सपा ने संभल में हुई मौतों के लिए राज्य सरकार को जिम्मेदार ठहराया है और भाजपा पर नफरत फैलाने का आरोप लगाया है। हालाँकि, सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने अभी तक संभल जाने का कोई प्रयास नहीं किया है। विधानसभा में केवल सपा के नेता प्रतिपक्ष (एलओपी) माता प्रसाद पांडे ने 30 नवंबर को पार्टी नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ शहर का दौरा करने का प्रयास किया, जिसे प्रशासन ने विफल कर दिया। कई लोग इसे भाजपा को मामले का ध्रुवीकरण करने से रोकने के लिए इस मुद्दे पर सावधानी से आगे बढ़ने के एसपी के कदम के रूप में देखते हैं।

दूसरी ओर, कांग्रेस न केवल इस मुद्दे पर मुखर रही है, बल्कि पार्टी नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी ने संभल जाने की भी कोशिश की, लेकिन यूपी पुलिस ने उन्हें रोक दिया। इस महीने की शुरुआत में कांग्रेस कार्य समिति ने बैठक में पारित अपने एक प्रस्ताव में पूजा स्थल अधिनियम के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। संभल याचिका के बाद यूपी कांग्रेस की अल्पसंख्यक शाखा ने भी इस अधिनियम के कथित उल्लंघन के खिलाफ राज्यव्यापी अभियान शुरू किया है। कांग्रेस का अभियान 6 दिसंबर को बाबरी मस्जिद विध्वंस की बरसी पर शुरू किया गया था, जो संविधान के निर्माता बी आर अंबेडकर की पुण्य तिथि भी है। यूपी कांग्रेस के कुछ नेताओं ने यहां तक घ्आरोप लगाया है कि इन विवादों को फिर से खोलने से दलितों को आवंटित भूमि का मुद्दा भी बढ़ सकता है। कांग्रेस मुसलमानों और दलितों के अपने पारंपरिक वोट बैंक को फिर से मजबूत करने का प्रयास कर रही है, जिसे 2024 के लोकसभा चुनावों में देखा गया था, जब उसने सत्तारूढ़ भाजपा पर कथित तौर पर ष्संविधान को बदलने' की कोशिश करने का आरोप लगाया था। इन वर्गों का समर्थन सबसे पुरानी पार्टी को 2027 के विधानसभा चुनावों के लिए अपने भारतीय सहयोगी सपा के साथ सीट–बंटवारे पर बातचीत करने के लिए बेहतर स्थिति में लाएगा।

खेल एवं युवा कल्याण मंत्री ने किया ग्रामीण स्टेडियम का शिलान्यास,499.28 लाख रुपये से होगा निर्माण

संवाददाता–देवरिया। कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि भाजपा की सरकार ने खेलों में रुचि रखने वाले युवाओं के दर्द को महसूस कर प्रदेश के सभी जिलों में ग्रामीण स्टेडियम बनाने का निर्णय लिया है। जिससे गांव की प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा। भिसवा में बनाने वाले स्टेडियम से पथरदेवा विधान सभा क्षेत्र के युवकों को अपनी प्रतिभा को निखारने का सुनहरा अवसर मिलेगा। देवरिया के विकास खंड के ग्राम भिसवा में बुधवार को यूपी के खेल एवं युवा कल्याण मंत्री गिरीश चंद्र यादव ने पांच एकड़ में बनने वाले ग्रामीण स्टेडियम का विधिविधान पूर्वक भूमि पूजन और शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि सर्वप्रथम युवा कल्याण विभाग की ओर से सीएम योगी का स्वागत करता हूं।

क्योंकि उनके नेतृत्व में भाजपा सरकार के नेतृत्व में युवा और कल्याण विभाग ग्रामीण स्टेडियम बनाकर ग्रामीण युवाओं में खेलकूद की गतिविधियों से जोड़ने का कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि युवा कल्याण विभाग ने पहली बार युवाओं को खेल से जोड़ने और मूलभूत सुविधाओं के लिए खेल नीति बनाई है। पहले केवल खेलों के सर्टिफिकेट दिए जाते थे, लेकिन अब खिलाड़ी तैयार किए जाते हैं। जो देश के लिए मेडल लाते हैं। खेलो इंडिया के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर ग्रामीण अंचल की प्रतिभाएं उभर कर सामने आ रहीं हैं।अब ओलंपिक और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में भारत के खिलाड़ी ढेर सारे स्वर्ण पदक ला रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कृषिमंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि भाजपा की सरकार ने खेलों में रुचि रखने वाले युवाओं के दर्द को महसूस कर प्रदेश के सभी जिलों में ग्रामीण स्टेडियम बनाने का निर्णय लिया है। जिससे गांव की प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा। भिसवा में बनाने वाले स्टेडियम से पथरदेवा विधान सभा क्षेत्र के युवकों को अपनी प्रतिभा को निखारने का सुनहरा अवसर मिलेगा। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह, सीडीओ प्रत्यूष पांडेय, जिला युवा कल्याण अधिकारी पुनीत कुमार, बीडीओ अरुण कुमार पांडेय, ब्लॉक प्रमुख राम आशीष गुप्ता, नगर पंचायत अध्यक्ष जनार्दन कुशवाहा, हेतिमपुर नगर पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्र यादव, मंडल अध्यक्ष जीवन पति त्रिपाठी, अंबुज शाही, विनय राव, दुष्यंत राव आदि मौजूद रहे।

मनकापुर में सड़कों से हटेगा अतिक्रमण –एसडीएम

संवाददाता–गोण्डा। बाजार में हुए अतिक्रमण से निजात दिलाने के लिए एसडीएम व सीओ की अध्यक्षता में कोतवाली परिसर में व्यापारियों, नगर वासियों, संभ्रांत लोगों के साथ बैठक हुई। इसमें सड़क के किनारे अतिक्रमण हटाने पर चर्चा हुई। एसडीएम ने इसके लिए व्यापारियों का सहयोग मांगा। उन्होंने कहा कि जल्द की कस्बे में अभियान चलाकर अवैध अतिक्रमण हटाया जाएगा।

कोतवाली मनकापुर में बुधवार दोपहर में एसडीएम यशवंत राव, सीओ आरके सिंह की संयुक्त अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गयी। इसमें कस्बे में आए दिन लगने वाले जाम पर खूब चर्चा हुई। एसडीएम यशवंत राव ने कहा कि कस्बा मनकापुर में सड़कों पर अतिक्रमण है व्यापारी खुद हटा लें अन्य प्रशासन सख्ती के साथ अतिक्रमण हटवायेगा। सीओ राजेश कुमार सिंह ने कहा कि कस्बे में सड़क के किनारे जो टैक्सी स्टैंड बने हैं, उन्हें बाजार और भीड़भाड़ वाले इलाके से थोड़ा दूर ले जाना होगा। इनके वजह से सड़क पर जाम लगने के साथ दुर्घटनाएं भी होती हैं।

बैठक में नगर पंचायत अध्यक्ष दुर्गेश सोनी व सभासद वैभव सिंह, सभासद विकास हाण्डा उर्फ गोपी, व्यापारियों, संभ्रांत लोगों के मध्य चर्चा हुई कि व्यापारियों, पुलिस के बीच संवाद हो। इसके लिए एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाने पर चर्चा हुई। कोतवाल मनोज पाठक ने कहा कि आपस में चर्चा करके एक सूचना प्रसारित करा दिया जाए कि अपनी दुकान के सामने व्यापारी स्वतः अतिक्रमण हटा लें अन्यथा नगर पंचायत में एसडीएम की अगुवाई में अभियान चलाया जाएगा। इस मौके पर राजेश मौर्या, श्यामू गुप्ता, राजेश सिंह काका, सभासद श्याम नरायन, अब्दुल मन्नान, पंकज सिंह, अजय कुमार, प्रेमचंद चौहान सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

मासूम की हत्या के बाद असमंजस में परिवार, बयान दर्ज कराने से इनकार

संवाददाता–कुशीनगर। शादी वाले घर में बारात जाने की तैयारी के दौरान मासूम के अपहरण का केस दर्ज करा चुके परिवार के सभी लोग बच्ची की हत्या के बाद असमंजस में हैं। उन्हें समझ नहीं आ रहा कि हत्या का खुलासा होने के बाद आरोपी नाबालिग रिश्तेदार के खिलाफ बयान दर्ज कराएं भी कैसे। उन्हें अब तक इस पर यकीन करना मुश्किल है कि उसने जानबूझ कर बच्ची का पानी टंकी में डाला होगा।

सोमवार की देर शाम को दूल्हे की अबोध भांजी के गायब होने के बाद घर में खुशियों के बजाय मातम पसर गया। परिजनों ने उदास मन से रात में विवाह की रस्मों को पूरा किया। बारात के लिए दर्जनों गाड़ियों का काफिला जाना था। बच्ची के गायब होने की सूचना पर वधू पक्ष के लोग भी दूल्हे के घर पहुंच गए। दूल्हा इस माहौल में शादी को तैयार नहीं था। काफी मान मनौवल के बाद आधे अधूरे मन से केवल दूल्हे की गाड़ी ही शादी के लिए गयी। मंगलवार को जिस घर में दुल्हन की डोली उतरनी थी उस घर में सुबह भांजी के मौत की खबर ने दूल्हे के पक्ष के साथ साथ दुल्हन पक्ष के लोगों को भी झकझोर कर रख दिया। इस गमगीन माहौल में आखिरकार घर वालों ने लड़की की विदाई को स्थगित कर दिया। पुलिस ने मंगलवार को बच्ची का शव मिलने के बाद खुलासा किया कि दूल्हे की बहन सोनम गुप्ता के साथ आयी उसके पति अमित गुप्ता की नाबालिग भांजी ने ही उसकी हत्या पानी की टंकी में डालकर की है। पुलिस के इस खुलासे पर पूरे परिवार को यकीन करना मुश्किल हो गया है। सोनम गुप्ता व उसके पति का कहना है कि नाबालिग किशोरी ऐसा नहीं कर सकती। पुलिस ने उसे मानसिक रूप से बीमार बताया है मगर ऐसा नहीं है। पुलिस ने जांच पड़ताल के बाद आखिरकार उनसे बयान दर्ज कराने को कहा कि भी ने इनकार कर दिया। उनका कहना है कि अपनी सगी नाबालिग भांजी को आरोपी बनाना असंभव है। उनका सवाल है कि आखिरकार एक बेटी को खोकर वह दूसरी रिश्तेदार बेटी को कैसे खो सकते हैं। परिजनों ने इस संबंध में पुलिस को बयान दर्ज कराने से फिलहाल इनकार कर दिया है। उनका कहना है कि आखिरकार किशोरी उनकी जिम्मेदारी पर यहां आयी थी। उसके बिना घर लौटना उनके लिए बेहद मुश्किल होगा। वह पुलिस से इस बारे में आगे की कार्रवाई नहीं करने की गुहार लगा रहे हैं। पुलिस को परिवार की हालत पर तरस तो आ रहा है मगर उनकी मजबूरी है कि बच्ची के अपहरण का केस दर्ज होने व शव बरामद हो गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी आ गयी है। नाबालिग आरोपी के जुर्म कबूल करने के बाद भी उसके खिलाफ कार्रवाई नहीं करना पुलिस के लिए असंभव है।

तीन फ्लोर का बनेगा बुद्धा काम्पलेक्स, विधि–विधान से हुआ भूमि पूजन

संवाददाता–महराजगंज। महराजगंज शहर के लिए बड़ी खबर है। नगर पालिका की ओर से जिला महिला अस्पताल के पास बुद्धा काम्पलेक्स निर्माण का काम शुरू कराया है। बुधवार को सदर विधायक जयमंगल कन्नौजिया ने इस काम्पलेक्स का विधि–विधान से भूमि पूजन किया। डीएम अनुनय झा सहित अन्य अफसर व नगरपालिका के लोग मौजूद रहे। जिला महिला अस्पताल के पास नगर पालिका की जमीन है। जिला प्रशासन की पहल पर नगर पालिका प्रशासन इस जमीन में काम्पलेक्स बनाने का प्रस्ताव तैयार कर पास किया है। इस काम्पलेक्स में दुकानों, कोचिंग सेंटरों, रेस्टोरेंट व बैंक शाखाओं को जगह मिलेगी। जिला मुख्यालय पर इस काम्पलेक्स के होने के कारण इसकी डिमांड बहुत अधिक होगी और बहुत अच्छे लोकेशन पर एक परिसर में हर तरह की दुकान की सुविधा लोगों को मिलेगी। भूमि पूजन करने के बाद विधायक जयमंगल कन्नौजिया ने कहा कि यह काम्पलेक्स शहर के विकास में एक नया आयाम होगा। एक जगह अलग–अलग वेराइटी की दुकानें मिलेंगी और अच्छे लोकेशन पर लोगों को रेस्टोरेंट, बैंक आदि की सुविधाएं मिलेंगी। उन्होंने समय से गुणवत्तायुक्त निर्माण कराने की बात कही। डीएम अनुनय झा ने शहर के विकास के लिए इस तरह के काम्पलेक्स की जरूरत जताई। कहा कि इसके बन जाने से शहर को एक उपलब्धि मिलेगी। इस दौरान अपर जिलाधिकारी डॉ. पंकज कुमार वर्मा, नगरपालिका अध्यक्ष डॉ. पुष्पलता मंगल, ईओ आलोक कुमार, अध्यक्ष प्रतिनिधि निर्मेष मंगल, सभासदगण और अन्य लोग उपस्थित रहे।

यह बुद्धा काम्पलेक्स तीन मंजिला होगा। ग्राउंड फ्लोर और प्रथम तल पर 19–19 दुकानें होगी। द्वितीय व तृतीय तल पर हाल के साथ दुकानें होंगी। काम्पलेक्स निर्माण कार्य पूरा होने के बाद लाटरी के माध्यम से दुकानों का आवंटन होगा। लाटरी में शहरी लोग ही शामिल हो सकते हैं। ऐसे में एक साथ 38 शहरवासियों को काम्पलेक्स में दुकान मिलेगी।

पोषण भी, पढ़ाई भी कार्यक्रम के तहत आंगनबाड़ी का प्रशिक्षण शुरु

संवाददाता–देवरिया। पोषण भी, पढ़ाई भी कार्यक्रम के अंतर्गत आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों के तीसरे बैच का तीन दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ बुधवार को आईटीआई के मल्टीपरपज हॉल में मुख्य विकास अधिकारी प्रत्यूष पाण्डेय के द्वारा किया गया। प्रशिक्षण में बाल विकास परियोजना सदर की 9, बैतालपुर की 108, शहर की 41 और भटनी की 60 आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों ने भाग लिया।

मुख्य विकास अधिकारी ने बताया कि नवीन शिक्षा नीति के अंतर्गत आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों का महत्व बढ़ा है। यह आवश्यक है कि आंगनबाड़ी कार्यकत्रियां अपनी क्षमता बढ़ा कर उपलब्ध बाजार आधारित शिक्षा से बेहतर प्रदर्शन करें। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण आपकी क्षमता वृद्धि के साथ–साथ पोषण और पढ़ाई के सामंजस्य को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। जिला कार्यक्रम अधिकारी देवेंद्र कुमार ने आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को लाभार्थियों की पोषण निगरानी और पोषण ट्रैकर पर उनका विवरण दर्ज करने की प्रक्रिया को बताया। बाल विकास परियोजना अधिकारी बैतालपुर केके सिंह, बाल विकास परियोजना अधिकारी शहर अवधेश कुमार सिंह व नामित मुख्य सेविकाएं उपस्थित रहीं।

जो नीति के अधीन रहेगा उसे ब्रम्हानन्द प्राप्त होगा

—श्रीमद्भागवत कथा

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती । जिसका जीवन शुद्ध और पवित्र है उसी को भजनानन्द मिलता है। जो पवित्र जीवन जीता है उसे ही ईश्वर का ज्ञान मिलता है। सुनीति का फल ध्रुव है। जो नीति के अधीन रहेगा उसे ब्रम्हानन्द प्राप्त होता है। यह सद् विचार आचार्य अनिरूद्ध जी महाराज ने राजेश्वरी मिश्रा प्राकृतिक कृषि फार्म दुबखरा में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के तीसरे दिन व्यासपीठ से व्यक्त किया।

महात्मा जी ने कहा कि राजा उत्तानपाद के दो रानियां और दो पुत्र थे, राजा को सुनीति नहीं सुरूचि ही प्यारी थी। सुरूचि का पुत्र राजा की गोद में बैठा था ध्रुव ने भी पिता से अपनी गोद में बिठाने के लिये कहा। ध्रुव को राजा गोद में बिठाये यह सुरूचि को पसन्द नहीं था। राजा ने सोचा की ध्रुव को गोद में बिठाऊंगा तो रानी नाराज हो जायेगी। राजा ने ध्रुव की अवहेलना की और मुख मोड़ लिया। ध्रुव की मां सुनीति ने ध्रुव से कहा कि मांगना ही है तो ठाकुर जी से मागो। मैने तुझे नारायण को सौंप दिया है। जो पिता तेरा मुंह तक नहीं देखना चाहता उसके घर पर रहना निरर्थक है। ध्रुव अपनी विमाता से भी आशीर्वाद लेकर वन की ओर चल पड़ा। महात्मा जी ने कहा कि 5 वर्ष के बालक ध्रुव को माता सुनीति तप के लिये भेजती है और आज कल की मातायें पुत्रों को सिनेमा देखने के लिये भेजती है।

ध्रुव तपस्या का वर्णन करते हुये महात्मा जी ने कहा कि बालक माता के दोष के कारण चरित्रहीन, पिता के दोष के कारण मूर्ख, वंश दोष के कारण कायर और स्वयं दोष के कारण दरिद्र होता है। अधिकारी शिष्य को मार्ग में ही गुरू मिल जाते हैं। परमात्मा और सद्गुरू दोनो व्यापक है। सर्व व्यापी को खोजने की नहीं, पहचानने की आवश्यकता है। नारद जी की प्रेरणा से भक्त ध्रुव ने वृन्दावन में यमुना नदी के तट पर मधुवन में उपासना आरम्भ किया। भक्त ध्रुव ने घोर तपस्या किया और जब देवगण ने नारायण से प्रार्थना किया कि आप ध्रुव कुमार को शीघ्र दर्शन दीजिये तो भगवान ने देवो से कहा मैं ध्रुव को दर्शन देने नहीं स्वयं ध्रुव का दर्शन करने जा रहा हूं। ध्रुव को दर्शन देते हुये भगवान ने कहा तू कुछ कल्पो के लिये राज्य का शासन कर इसके पश्चात तुझे अपने धाम में ले चलूंगा। महात्मा जी ने कहा कि परमात्मा जिसे अपना बनाता है शत्रु भी उसकी बन्दना करते हैं। जो ईश्वर से सम्बन्ध जोड़ लेता है जगत उसी के पीछे दौड़ने लगता है। राजा उत्तानपाद ने पुत्र ध्रुव को गले से लगा लिया और माता सुनीति को लगा कि आज ही वह पुत्रवती हुई है क्योंकि उसका पुत्र भगवान को प्राप्त करके आया है।

ध्रुव ने भगवान की शरणागति स्वीकार किया तो भगवान ने उनको दर्शन, राज्य और वैकुण्ठवास भी दिया। गोपाल शर्मा, लक्ष्मण, आशीष ने भक्ति गीतों से वातावरण को आध्यात्मिक हो गया है। यज्ञाचार्य योगेश मिश्रा और मनोज शुक्ल विधि विधान से पूजन करा रहे हैं। इसी कड़ी में गीता जयन्ती के अवसर पर संगोष्ठी में विद्वानों ने विचार विमर्श किया।

श्रीमद्भागवत कथा के क्रम में मुख्य यजमान कर्नल के.सी. मिश्र, ने विधि विधान से व्यास पीठ का पूजन अर्चन किया। मुख्य रूप से स्वामी चिन्मयानन्द, योगेन्द्र मिश्र शास्त्री, डा. अम्बरीश मिश्र, डा. सूर्य प्रकाश मिश्र, डा. भुवनेश्वर, मनीष सिंह, डा. अवध नरायन मिश्र, डा. दिलीप अस्थाना, डा. सी.एस. नायक, ऊषा सिंह, राजपति, अंकुर यादव, राधेश्याम यादव, रंजीत मिश्र, कर्नल मिथुन मिश्र, रामवृक्ष मिश्र, लालजी मिश्र, बजरंगी मिश्र, डा. सत्यनरायन मिश्र, डा. अवधा नरायन मिश्र, दिग्विजय, रविन्द्र, आनन्द, कृष्ण कुमार पाण्डेय, आर.के. शुक्ल, सुशील मिश्र, आर.के. शुक्ल, आर.के. त्रिपाठी, कुसुम मिश्रा, अनुराधा पाण्डेय, सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

संघर्ष पूरी दुनिया में चल रहा है, समाधान केवल अध्यात्म –स्वामी अभेदानन्द

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

अयोध्या। चिन्मय मिशन साउथ अफ्रीका में सेवा दे रहे स्वामी अभेदानन्द प्रभु श्री राम की जन्मस्थली अयोध्या में श्री राम कथा के द्वारा युवाओं को प्रेरणा दे रहे हैं। स्वामी जी बचपन से स्वामी चिन्मयानंद महाराज से जुड़े रहे और 1993 में संदीपनी साधनालय में वेदांत पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। 8 मार्च 2005 को स्वामी तेजोमयानंद द्वारा संन्यास की दीक्षा ली और पिछले कई वर्षों से वे भारत, बहरीन, नेपाल, सिंगापुर, मलेशिया, इंडोनेशिया और अफ्रीका की यात्रा कर चुके हैं, वयस्कों, युवाओं और बच्चों के लिए कई ज्ञान यज्ञ और आध्यात्मिक शिविर आयोजित कर चुके हैं। अयोध्या में कथा के दौरान स्वामी जी से वर्तमान अयोध्या और युवाओं पर चर्चा हुई तो उन्होंने बताया कि मैं बचपन में अयोध्या आया था लेकिन आज अयोध्या में लंबे संघर्ष के बाद मंदिर का निर्माण देखकर अति प्रसन्न हुआ हमारी इस कथा में आए भारत और कई अन्य देशों के लोगों ने भी रामलला के दर्शन किए, अयोध्या के दर्शन किए सब ने अयोध्या और अयोध्या वासियों की प्रशंसा की।

उन्होंने कहा कि श्री राम जन्मभूमि के बाद कृष्ण जन्मभूमि भी बहुत जल्द बन जाएगी। हिंदुत्व पर प्रहार पर उन्होंने कहा की संघर्ष तो पूरे विश्व में हो रहा है वर्तमान में सीरिया की स्थिति पर उन्होंने कहा कि वहां हिंदू तो नहीं है लेकिन सीरिया का अस्तित्व खतरे में है फिर भी जो भी लोग हिंदुत्व पर हमला कर रहे हैं वह गलत है और हमेशा गलत चीजों से बचना चाहिए। उन्होंने बताया कि पूरे विश्व में वर्चस्व के लिए संघर्ष चल रहा है इसको कोई समाप्त कर सकता है तो वहां अध्यात्म है सनातन धर्म है वैदिक संस्कृति है यही है जिससे हम एक बार पुनः विश्व में शांति ला सकते हैं क्योंकि हम पूरे विश्व को अपना परिवार मानते हैं। उन्होंने कहा कि अयोध्या में आकर काफी प्रसन्नता मिली निश्चित ही अयोध्या की आध्यात्मिक सांस्कृतिक विरासत आज भी विद्यमान है और संघर्ष पूरे विश्व में है इसका विराम आध्यात्मिक ही है इसीलिए भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में युवाओं को जागरूक करने के लिए लगातार कार्य कर रहा हूं।

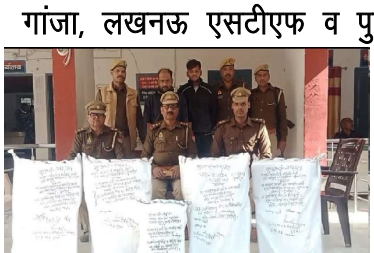

असम से लाकर देवरिया में खपाना था 150 किलो गांजा, लखनऊ एसटीएफ व पुलिस ने पकड़ा

संवाददाता–देवरिया। लखनऊ एसटीएफ को मुखबिर ने सूचना दी कि असम से गांजा की खेप बिहार के रास्ते देवरिया आ रही है। इस सूचना पर लखनऊ एसटीएफ की टीम मंगलवार की देर रात हेतिमपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर पहुंच जांच शुरु कर दी। इसी बीच एक कंटेनर बिहार से जिले की सीमा में प्रवेश किया तो एसटीएफ ने उक्त संदिग्ध कंटेनर का पीछा करना शुरु कर दिया। असम से बिहार में सप्लाई देते हुए जिले में डिलेवरी देने पहुंची गांजा के भारी खेप को एसटीएफ लखनऊ की टीम ने रामपुर पुलिस के सहयोग से पकड़ लिया। टीम ने देवरिया के रामपुर कारखाना पुलिस के साथ मंगलवार की देर रात संयुक्त कार्रवाई में गांजा लदे एक कंटेनर को तस्कर के साथ देसही देवरिया ब्लॉक मुख्यालय के पास पकड़ कर जब्त कर लिया।

इसके बाद गांजा तस्कर से जानकारी ली तो उसका सरगना यूपी की सीमा से सटे बिहार प्रांत के गोपालगंज के विजयीपुर थाने के मठिया गांव निवासी निकाला, जिसे एसटीएफ ने रातों रात गिरफ्तार कर लिया। एसटीएफ के हत्थे चढ़े सरगना व तस्कर करीब 11 माह बाद जेल से बाहर आए थे। जेल से बाहर आने के बाद फिर से गांजा की खेप मंगानी शुरू कर दी थी। लखनऊ एसटीएफ को मुखबिर ने सूचना दी कि असम से गांजा की खेप बिहार के रास्ते देवरिया आ रही है। इस सूचना पर लखनऊ एसटीएफ की टीम मंगलवार की देर रात हेतिमपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर पहुंच जांच शुरु कर दी। इसी बीच एक कंटेनर बिहार से जिले की सीमा में प्रवेश किया तो एसटीएफ ने उक्त संदिग्ध कंटेनर का पीछा करना शुरु कर दिया। चालक को शायद इस बात की भनक लग गई। वह हाइवे छोड़कर अपनी वाहन महुआडीह थानाक्षेत्र के देवरिया मार्ग पर घुमा लिया। इसके बाद वह अवरही तिराहा से रामपुर कारखाना थानाक्षेत्र के देसही की तरफ वाहन को मोड़ लिया और तेजी से भागने लगा।

यह देख एसटीएफ ने रामपुर कारखाना पुलिस से सहयोग लिया और नाकाबंदी कर उसे देसही देवरिया ब्लॉक मुख्यालय के सामने पकड़ लिया। चालक मजहर वाहन छोड़कर भागने की कोशिश करने लगा, लेकिन, पुलिस ने उसे दौड़ा कर पकड़ लिया।

कंटेनर में डेढ़ क्विंटल गांजा लादकर वह बिहार लेकर अपने सरगना अभिमन्यु के ठिकाने पर जा रहा था। उसमें से कुछ माल निकालकर वह बिहार में कई जगह सप्लाई भी दे चुका था। पकड़ा गया चालक मजहर अली, रामपुर कारखाना थानाक्षेत्र के पिपरा मदन गोपाल गांव का रहने वाला है।

पुलिस की पूछताछ में उसने बिहार प्रांत के गोपालगंज जिले के विजयीपुर थाना क्षेत्र के मठिया गांव निवासी सरगना अभिमन्यु सिंह उर्फ मन्नू का भी नाम उगल दिया। एसटीएफ ने पुलिस के सहयोग से रातो रात बिहार के गोपालगंज के विजयीपुर थानाक्षेत्र के मठिया गांव से दबोच लिया। पुलिस ने दोनों आरोपियों को नारकोटिक्स टीम की मदद से इससे पहले भी 1.70 कुंतल गांजा की भारी खेप के साथ दिसंबर 2023 में गिरफ्तार कर जेल भेजी थी। दोनों ग्यारह महीने बाद जेल से बेल पर बाहर आए थे। इसके बाद पुनरू गांजा तस्करी का कार्य शुरु कर दिया था।

छात्रों की उपस्थिति कम मिलने पर 238 प्रधानाध्यापकों से स्पष्टीकरण तलब

संवाददाता–बलरामपुर। परिषदीय विद्यालयों में छात्रों की उपस्थित कम मिलने पर 238 प्रधानाध्यापकों को नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा गया है। इन विद्यालयों में 60 प्रतिशत से कम छात्रों की उपस्थिति पाई गई है। यह कमी इंटरएक्टिव वॉइस रिस्पांस सिस्टम आईवीआरएस से की गई समीक्षा के माध्यम से सामने आई है।

परिषदीय विद्यालयों में लगातार छात्रों की कम उपस्थिति बेसिक शिक्षा विभाग के लिए बड़ी चुनौती बन गई है। बीएसए शुभम शुक्ल ने नौ दिसंबर को आईवीआरएस पर छात्रों की उपस्थिति की समीक्षा की। जिसमें 238 परिषदीय स्कूल इस तरह मिले हैं जहां छात्रों की उपस्थिति 60 प्रतिशत से नीचे है। इनमें मुख्य रूप से बलरामपुर ग्रामीण में 28, गैसड़ी एवं गैंडास बुजुर्ग में 23–23, हर्रैया सतघरवा में 31, श्रीदत्तगंज शिक्षा क्षेत्र में 52, तुलसीपुर में 30, पचपेड़वा में 16, रेहरा में 19 एवं उतरौला में 14 सहित नगर क्षेत्र बलरामपुर एवं उतरौला में एक–एक विद्यालय शामिल हैं। बेसिक शिक्षाधिकारी ने इन स्कूलों में छात्रों की संख्या कम मिलने पर प्रधानाध्यापकों से छात्रों की कम उपस्थिति को लेकर स्पष्टीकरण तलब किया है। साथ ही उपस्थिति बढ़ाने के लिए क्या प्रयास किए गए हैं इस संबंध में भी जानकारी मांगी है।

बीएसए ने प्रधानाध्यापकों को अभिभावकों से संपर्क कर छात्रों की उपस्थिति शत प्रतिशत बढ़ाने का निर्देश दिया है। साथ ही उपस्थित में सुधार न होने पर दिसंबर महीने का वेतन रोकने की चेतावनी भी दी है। बीएसए ने खंड शिक्षाधिकारियों को निर्देशित किया है कि अपने–अपने शिक्षा क्षेत्र में इंटरएक्टिव वॉइस रिस्पांस सिस्टम के रिपोर्ट को गंभीरता से लेते हुए संबंधित विद्यालयों में छात्रों की शत प्रतिशत उपस्थित सुनिश्चित करें।

अयोध्या की गरिमा के अनुरूप मिलेगा रस कुंज स्वीट हाउस में प्रसाद

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

अयोध्या। अयोध्या के श्रीराम पथ हनुमानगढ़ी चौराहे के पास वैद्य मंदिर जी के सामने अयोध्या की गरिमा के अनुसार देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को शुद्ध देसी घी में प्रसाद के साथ नाश्ता भी उपलब्ध कराएगी रस कुंज स्वीट हाउस, जिसका उद्घाटन मंगलवार को हनुमानगढ़ी के वरिष्ठ पुजारी हेमंत दास ने किया और बताया कि अयोध्या की यह पुरानी दुकान है लेकिन राम पाठ पर इसके नई ब्रांच का उद्घाटन किया गया है जिससे अयोध्या में आने वाले श्रद्धालुओं को यहां की गरिमा के अनुसार शुद्ध देसी घी में भगवान को चढ़ाने के लिए और घर ले जाने के लिए प्रसाद के साथ–साथ नाश्ता भी मिलेगा जो एक सामान्य बजट में होगा की आम आदमी भी अयोध्या की याद को अपने साथ अपने घर तक ले जा सके। अयोध्या तीर्थ पुरोहित धर्मार्थ सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष राजेश महाराज ने कहा कि

रस कुंज स्वीट हाउस आज का नहीं बहुत पुराना है अयोध्या का प्रत्येक व्यक्ति इनसे परिचित है, लेकिन इनके मिठाई की स्वाद भारत ही नहीं विदेश तक पहुंचे और लोगों की सेवा हो सके इसके लिए राम पथ पर नई दुकान खोली गई है जिसमें शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाएगा। विकास गुप्ता ने बताया कि आज हमने अपनी दूसरी ब्रांच पर श्रद्धालुओं के लिए देसी घी की कचौड़ी,समोसा, जलेबी,इमरती,ड्राई फ्रूड्स,नमकीन, कि सेवा श्रद्धालुओं के लिए शुरू की है। जिसमें हमें अयोध्या के सभी संतो महंतों और सभी नागरिकों को आशीर्वाद प्राप्त है अब भारत ही नहीं विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं का भी आशीर्वाद मिले इसके लिए राम पथ पर नई दुकान खोली गई है।विवेक गुप्ता,विनीत गुप्ता, कृष्ण मोहन राय,व पारिवारिक सदस्य मौजूद रहे।

स्वच्छता को लेकर उत्कृष्ट कार्य करने वाले सम्मानित

संवाददाता–देवरिया। विश्व शौचालय दिवस 19 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलने वाले अभियान का समापन बुधवार को हुआ। विकास भवन सभागार में प्रभारी जिला अधिकारीध्मुख्य विकास अधिकारी प्रत्यूष पांडे द्वारा उत्कृष्ट कार्य करने वाले 5 ग्राम पंचायतों को श्रेष्ठ सामुदायिक शौचालय सम्मान व दो निजी शौचायलयों के स्वामियों को श्रेष्ठ व्यक्तिगत शौचालय के सम्मान से सम्मानित किया गया।

इस क्रम में श्रेष्ठ सामुदायिक शौचालय का सम्मान विकासखंड बनकटा के अंतर्गत ग्राम पंचायत पिपरा उत्तर पट्टी की प्रधान संगीता कुशवाहा, बैतालपुर विकासखंड के ग्राम पंचायत करमेल बनरहीं के प्रधान रामबेलास यादव, भागलपुर विकासखंड के ग्राम पंचायत मौना गढ़वा के ग्राम प्रधान जनार्दन कुशवाहा, भलुअनी विकासखंड के ग्राम पंचायत बहोर धनौती के प्रधान संदीप सोनकर व ग्राम पंचायत नरौली खेम के प्रधान पारस यादव को दिया गया।

इसी प्रकार श्रेष्ठ व्यक्तिगत शौचालय का सम्मान भटनी विकासखंड के ग्राम पंचायत बेहरा डाबर निवासी योगेश तिवारी को दिया गया।

दिव्यांग होने के बावजूद भी इन्होंने स्वयं के संसाधन से शौचालय का निर्माण करा कर स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण का प्रचार प्रसार करने पर दिया गया। जबकि दूसरा पुरस्कार ग्राम पंचायत भरहे चौरा निवासी शारदा देवी को दिया गया।

इस दौरान परियोजना निदेशक अनिल कुमार, जिला पंचायत राज अधिकारी श्रवण कुमार चौरसिया, जिला कंसलटेंट राजेश मणि त्रिपाठी, लेखाकार शिवम मिश्र सहित संबंधित ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान सचिव व केयरटेकर मौजूद रहे।

एनसीसी भर्ती परीक्षा में 72 बच्चों ने लिया हिस्सा

संवाददाता'–गोण्डा। विद्यानगर किसान इंटर कॉलेज में 48वीं बटालियन एनसीसी गोंडा के सूबेदार मेजर अनंग पाल सिंह व हवलदार मोहन सिंह के नेतृत्व में एनसीसी की भर्ती परीक्षा का आयोजन हुआ। बुधवार को आयोजित परीक्षा में 72 बच्चों ने प्रतिभाग किया। प्रधानाचार्य राधामोहन पाण्डेय ने बताया कि बच्चों के भविष्य को देखते हुए एनसीसी में भर्ती परीक्षा कराई गई है। विद्यानगर किसान इंटर कॉलेज में बुधवार को आयोजित एनसीसी भर्ती परीक्षा में 72 बच्चों ने प्रतिभाग किया। इनकी मौखिक, लिखित व शारीरिक दक्षता की परीक्षा ली गई। जूनियर वर्ग के कक्षा 8 व 9 के बच्चों को एनसीसी में प्रतिभाग करने का अवसर मिला है। विद्यालय के 50 बच्चों का उनके परिणाम के आधार पर चयन होगा। प्रधानाचार्य ने बताया कि एनसीसी का प्रशिक्षण लेकर बच्चे देश के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। इस दौरान नवनीत शुक्ला, दीपक चौबे, संदीप कुमार, घनश्याम ओझा, गोपाल कृष्ण पांडे, विनायक प्रसाद दुबे, लाट बख्श मिश्र, जितेंद्र कुमार सोनी, सुरेश पाण्डेय, उमेश पांडे, विवेक वर्मा, तिलकराम वर्मा, मनोज वर्मा समेत अन्य शिक्षक मौजूद रहे।

मां की हत्याः लाश के साथ 5 दिन रहा नाबालिग बेटा, स्कूल के लिए जगाने पर वारदात, साइंटिस्ट पिता से बोला–गिर गई थीं

संवाददाता–गोरखपुर। भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र चेन्नई में वैज्ञानिक राममिलन की पत्नी की मौत के राज का पर्दाफाश पोस्टमार्टम रिपोर्ट और घर में दो जगहों पर खून के धब्बे व शव को घसीटने के निशान से हुआ। वहीं, सीसीटीवी कैमरे में भी किसी के आने की पुष्टि नहीं हुई। पुलिस ने इन पहलुओं पर जांच आगे बढ़ाई। शक के दायरे में आए बेटे से कड़ाई से पूछताछ की तो उसने पूरी घटना बयां कर दी। इसे सुनकर पिता ही नहीं पुलिस भी दंग रही गई। पत्नी की मौत और इकलौते बेटे की करतूत पर पिता का रो–रोकर बुरा हाल है। दरअसल, पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मिला कि शव छह दिन पुराना था और सिर में चोट लगने की वजह से मौत हुई है। पुलिस को जांच के दौरान घर में खून के दो जगहों पर निशान मिले। एक जगह पर घसीटने का भी निशान दिखा। इसके बाद यह तय हो गया कि मौत सामान्य नहीं है। डीवीआर चेक करने पर पता चला कि घर के अंदर किसी भी बाहरी का प्रवेश नहीं हुआ है। हर जगह बेटा ही नजर आया है। इसके बाद बेटे ने जो बातें बताईं, उसे सुनकर हर कोई सन्न रह गया। पुलिस की पूछताछ में बेटे ने बताया कि मम्मी ने एक दिसंबर को स्कूल जाकर प्रिंसिपल से उसकी शिकायत की थी। स्कूल में ही सबके सामने उसे डांट–फटकार लगाई गई। वहां प्रिंसिपल भी उसकी शिकायतें करने लगीं। उसे यह बात बहुत खराब लगी। तीन दिसंबर को वह स्कूल नहीं जाना चाह रहा था, लेकिन मम्मी उसके पीछे पड़ गईं। उसे जबरदस्ती पकड़कर स्कूल भेजने का प्रयास करने लगीं तो उसने उन्हें धकेल दिया। वह फर्श गिर गईं और थोड़ी देर में बेहोश हो गईं। उनके सिर से खून बह रहा था।

बेटे ने बताया कि वह डर गया। उन्हें छोड़कर स्कूल ड्रेस पहनी। बैग लिया और घर के बाहर ताला लगाकर निकल गया। शाम को घर आकर फिर मां की नब्ज चेक की तो उनकी सांसें नहीं चल रही थीं। उन्हें घसीटकर स्टोर रूम में ले जाकर छोड़ दिया। इसके बाद चार दिन तक घर में ही रहा। किसी को शक न हो, इसलिए सीसीटीवी कैमरे का कनेक्शन काट दिया। जब शव से बदबू आने लगी तो अगरबत्ती जला लिया करता था। पिपराइच इलाके में रहने वाले वैज्ञानिक ने अपने बेटे का शहर के एक अच्छे स्कूल में दाखिला कराया है। फिजिक्स, केमेस्ट्री और मैथ्स से वह कक्षा 12वीं की पढ़ाई कर रहा है। आरती को पता था कि बेटा बुरी संगत में फंस गया है, स्कूल के नाम पर वह मौजमस्ती करता है। इसलिए उस पर सख्ती करती थीं।

पुलिस को बेटे ने बताया कि तीन दिसंबर को मां ने टिफिन में पराठा–सब्जी बनाई थी। मां स्कूल जाने के लिए काफी देर तक मनाती रहीं। यही नहीं अच्छे नंबर से पास होने पर गिफ्ट देने की भी बात कही। कॉलोनी में थोड़ी–थोड़ी दूर पर कुल 18 मकान हैं। अधिकतर लोग एक दूसरे से बहुत कम मतलब रखते हैं। बगल में रहने वाले एक व्यक्ति ने बताया कि कक्षा 12वीं में पढ़ने वाले वैज्ञानिक के बेटे की हरकतें ठीक नहीं हैं। वह गलत संगत में रहता है। जबकि उसकी मां सख्त थीं। वह अक्सर बेटे की हरकतों पर उसे डांटती रहती थीं। बेटे और मां में हमेशा विवाद होता था। इसी तरह सुरक्षा में लगे एक गार्ड ने भी बताया कि उसकी संगत अच्छी नहीं है।

राममिलन विश्वकर्मा ने बताया कि तीन दिसंबर को दोपहर में पत्नी से बात हुई थी। हालचाल लिया, बातचीत में सब कुछ सामान्य जैसा था। शाम को कॉल करने लगा तो मोबाइल स्वीच ऑफ बताने लगा। तीन दिन लगातार मोबाइल बंद मिलने पर साली को घर भेजा। लेकिन बेटा घर पर नहीं था। वह पास में ही मंदिर परिसर में बैठा था। पूछने पर कुछ बता नहीं रहा था। साली ने उनसे कुछ अनहोनी की आंशका जाहिर की। इसके बाद वह फ्लाइट से रविवार को गोरखपुर आए। यहां कमरे में जाकर देखा तो खून से लथपथ पत्नी का शव पड़ा था। बेटे से पूछा तो उसने बताया कि स्कूल से आकर खाना खाकर सो गया था। जगा तो मां फर्श पर पड़ी थीं, वहां खून फैला हुआ था। यह देखकर डर गया और ताला बंदकर मंदिर चला गया। मोबाइल से घर के सीसीटीवी कैमरे को अटैच किया, उसमें खंगालने पर कोई बाहरी अंदर आते नहीं दिखा है। बेटा ऐसा कर देगा, कभी सोचा नहीं था।

सीएम योगी का निर्देश–गरीबों की जमीन कब्जा मुक्त कराएं, दबंगों को सिखाएं सबक

संवाददाता–गोरखपुर। सीएम योगी बुधवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में लोगों की समस्याएं सुन रहे थे। मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सामने कुर्सियों पर बैठाए गए लोगों तक वह खुद पहुंचे और एक–एक करके, इत्मीनान से सबकी समस्याएं सुनीं। इस दौरान करीब 200 लोगों से मुलाकात कर उन्होंने सबको आश्वस्त किया कि उनके रहते किसी के साथ नाइंसाफी नहीं होगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि गरीबों की जमीन कब्जामुक्त कराएं और अवैध कब्जा करने वाले दबंगों को करारा कानूनी सबक सिखाएं। उन्होंने कहा कि किसी की जमीन पर अवैध कब्जा करने वाले भूमाफिया और कमजोरों को उजाड़ने वाले दबंग किसी भी दशा में बख्शे न जाएं। उनके खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति का अनुसरण करते हुए कठोर से कठोर कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। सरकार का संकल्प है कि किसी के भी साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने जमीन कब्जा करने के मामलों में तत्काल कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। सीएम योगी बुधवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में लोगों की समस्याएं सुन रहे थे। मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सामने कुर्सियों पर बैठाए गए लोगों तक वह खुद पहुंचे और एक–एक करके, इत्मीनान से सबकी समस्याएं सुनीं। इस दौरान करीब 200 लोगों से मुलाकात कर उन्होंने सबको आश्वस्त किया कि उनके रहते किसी के साथ नाइंसाफी नहीं होगी। सबके प्रार्थना पत्रों को संबंधित अधिकारियों को संदर्भित करते हुए त्वरित और संतुष्टिपरक निस्तारण का निर्देश देने के साथ लोगों को भरोसा दिलाया कि सरकार हर पीड़ित की समस्या का समाधान कराने के लिए दृढ़ संकल्पित है। सबको न्याय मिलेगा और सबकी पीड़ा दूर की जाएगी। जनता दर्शन में दूसरे जिलों के भी लोग आए थे। जनता दर्शन में कुछ महिलाओं ने भूमाफिया और दबंगों द्वारा जमीन कब्जा करने की शिकायत की। इस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि भूमाफिया को करारा सबक सिखाया जाएगा। उनके रहते कोई भी किसी कमजोर या गरीब को उजाड़ नहीं पाएगा। मुख्यमंत्री ने पास में मौजूद प्रशासन व पुलिस के अफसरों को निर्देशित किया कि जबरन जमीन कब्जा करने वालों को चिन्हित कर उनके खिलाफ सख्त विधिक कार्रवाई करें। सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी दबंग, माफिया, अपराधी किसी की जमीन पर कब्जा न करने पाए। मुख्यमंत्री के समक्ष जनता दर्शन में कई लोग इलाज के लिए आर्थिक सहायता की गुहार लेकर पहुंचे थे। सीएम योगी ने उन्हें आश्वस्त किया कि सरकार इलाज के लिए भरपूर मदद करेगी। उनके प्रार्थना पत्रों को अधिकारियों को हस्तगत करते हुए मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि इलाज से जुड़ी इस्टीमेट की प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूर्ण करा कर शासन में उपलब्ध कराया जाए। सीएम ने अफसरों से कहा कि वे हर जरूरतमंद का आयुष्मान कार्ड बनवाएं ताकि इलाज के लिए उन्हें परेशान न होना पड़े। जनता दर्शन में कुछ महिलाएं अपने बच्चों के साथ आई थीं। मुख्यमंत्री ने उन्हें चॉकलेट गिफ्ट करते हुए स्नेहिल भाव से आशीर्वाद दिया।

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्ररह समायत अपील

अपील सं0 /2023

धारा 11 (1) सी0एच0एक्ट

अदालत– श्रीमान बन्दोवस्त अधिकरी चकबन्दी महोदय बस्ती जिला–बस्ती

कपूरराम आदि

बनाम

श्रीमती कुमारी आदि

1. श्रीमती कुमारी पत्नी भोला निवासी ग्राम नेवादा तप्पा रूधौली परगना मगहर पश्चिम तहसील रूधौली जिला–बस्ती पोस्ट मिश्रौलिया बाबू पिन कोड–272151

–उत्तरवादिनी प्रथम वर्ग

2. कृष्ण चन्द्र 3. रामजग पुत्रगण देवमुनि 4. विक्की 5. राजेश पुत्रगण रामसुधि 6. सुशील तिवारी 7. बब्बू तिवारी पुत्रगण उदयभान 8. रजनीश कुमार 9. गौरव कुमार पुत्रगण कृष्णभान 10. रमेश 11. सुरेश पुत्रगण लक्ष्मी प्रसाद 12. सूर्यनाथ 13. कमलेश 14. इन्द्रलेश 15. अरविन्द कुमार पुत्रगण विद्यामणि निवासीगण ग्राम मुड़बरा तप्पा उमरा परगना बस्ती पूरव तहसील भानपुर जिला–बस्ती पोस्ट मिश्रौलिया बाबू पिनकोड–272150 16. मुनिराम 17. रामधीरज पुत्रगण रामदुलारे निवासीगण ग्राम बागडीह उर्फ गायसाथ तप्पा उमरा परगना बस्ती पूरव तहसील भानपुर जिला–बस्ती पोस्ट सल्टौआ

–उत्तरवादीगण द्वितीय वर्ग

18. बजरंगी पुत्र राममूरत 19. जन्मेजय 20. पवन कुमार पुत्रगण जोखन निवासीगण ग्राम तिघरा तप्पा उमरा परगना बस्ती पूरव तहसील भानपुर जिला–बस्ती पोस्ट नगहरा पिन कोड– 212200

–उत्तरवादीगण तृतीय वर्ग

तारीख पेशी 21–12–2024

अपील बनराजी अदालत मुकाम मयरिखा महीना सन् 20 ई0 रेस्पान्डेन्ट

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 21 महीना 12 सन 2024 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है। अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जबाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी।

आज बतारीख 09 माह 12 सन 2024 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

अपील सं0– /2018

अदालत– श्रीमान उप जिलाधिकारी (न्यायिक) महोदय बस्ती जिला–बस्ती

सुजीत कुमार आदि

बनाम

नितिन कुमार

1. नितिन कुमार श्रीवास्तव पुत्र स्व0 गिरीश प्रसाद श्रीवास्तव साकिन मौजा अमहट उर्फ बैरिहवा तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला बस्ती

तारीख पेशी 17–12–2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 17 माह 12 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 11 माह 12 सन 2024 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान अपर कलेक्टर/अपर जिलाधिकारी महोदय बस्ती जिला–बस्ती

वाद सं. 1948/2022

धारा 30(2) उ0प्र0राजस्व संहिता

रामशंकर उर्फ गोकुल आदि

बनाम

राज्य सरकार आदि

ग्राम अशोकपुर तप्पा दुबौलिया परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

1. राज्य सरकार उत्तर प्रदेश द्वारा कलेक्टर बस्ती 2. ग्राम पंचायत अशोकपुर जरिए प्रधान ग्राम अशोकपुर तप्पा दुबौलिया परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

–विपक्षीगण प्रथम वर्ग

3. श्रीमती गुलाबी देवी पत्नी रामतीरथ 4. राजाराम पुत्र राम जियावन निवासीगण ग्राम अशोकपुर तप्पा दुबौलिया परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

विपक्षीगण द्वितीय वर्ग

तारीख पेशी 23–12–2024

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 12 के 23 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 20 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

कार्यालय खण्ड शिक्षा अधिकारी, नौगढ़, सिद्धार्थनगर

पत्रांक–ख०शि०अ०/प्रे०वि०/ 451–457/2024–25 दिनाँक 07 दिसम्बर 2024

प्रेस विज्ञप्ति

सर्वधारण को सूचित किया जाता है कि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सिद्धार्थनगर के पत्रांक–एस०एस०ए०/निमार्ण/4901–04/2023–24 दिनांक–30 सितम्बर, 2023 द्वारा विकास खण्ड–नौगढ़ के प्रा०वि० पिपरा नायक को जर्जर घोषित करते हुए नीलामी हेतु ब्लाक स्तरीय नीलामी समिति को निर्देशित किया गया है। जिसके क्रम में प्रा०वि० पिपरा नायक (न्यूनमत दर 18119.00 रू0) का नीलामी दिनाँक 18.12.2024 को अपराह्न 02:00 बजे स्थान–कार्यालय खण्ड शिक्षा अधिकारी, नौगढ़, सिद्धार्थनगर में होना सुनिश्चित है। नीलामी प्रक्रिया में बोली लगाने के इच्छुक व्यक्ति / संस्था निर्धारित मूल्य का 25 प्रतिशत नगद रूप में नीलामी समिति के पास जमा कर नीलामी प्रक्रिया में प्रतिभाग कर सकते हैं। अधिकतम बोली लगाने वाले व्यक्ति / संस्था भवन नीलामी के लिए अधिकृत होंगे। शेष सभी व्यक्ति / संस्था को उनके द्वारा जमा धनराशि उसी दिन वापस कर दी जायेगी।

(धर्मेन्द्र कुमार पाल)
खण्ड शिक्षा अधिकारी
नौगढ़, सिद्धार्थनगर

जन आक्रोश रैली निकाल हिन्दू संगठनों ने जताया विरोध, बंद रहे प्रमुख बाजार

संवाददाता–गोरखपुर। बुधवार को बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न के खिलाफ जन आक्रोश रैली का आयोजन किया गया। विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और कमिश्नर को ज्ञापन सौंपा। बांग्लादेश में हिंदु अल्पसंख्यकों पर हो रहे उत्पीड़न के विरोध में बुधवार को महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज परिसर में जन आक्रोश रैली का आयोजन किया गया। जिसमे पूरे जिले से विभिन्न मत–पंथ, धर्म, समाजिक संगठन, सांस्कृतिक संगठन, विभिन्न व्यापार मण्डल, समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल हुए। इंटर कॉलेज में सभा के बाद रैली निकाल कर हिन्दू संगठनों की तरफ से कमिश्नर को ज्ञापन सौंपा गया। हिन्दू रक्षा संघर्ष समिति के आह्वान पर निकली रैली महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज से रैली हरिओम नगर तिराहा, कचहरी चौराहा, शास्त्री चौक, अंबेडकर चौक होते हुए कमिश्नर ऑफिस पहुंची। जहां राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन मंडलायुक्त को सौंपा गया। रैली को लेकर गोलघर, घंटाघर, आर्यनगर समेत सभी प्रमुख बाजार दिन में दो बजे तक बंद रहे।

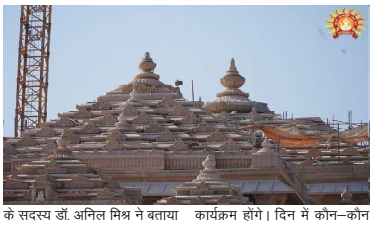

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुदाअलेह मुतवफ्फा (आर्डर 22, कायदा 4)

न्यायालय– सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद महोदय बस्ती जिला–बस्ती

वाद सं0 170/2018

गुलाब हुसेन

बनाम

फूलचन्द्र अग्रहरि आदि

1/1 प्रमोद कुमार 1/2 ओम प्रकाश 1/3 सूर्य प्रकाश पुत्रगण स्व0 फूलचन्द्र अग्रहरि निवासीगण ग्राम बेइली तप्पा कलवारी परगना नगर पूरव तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 06–01–2025

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 06 माह 01 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा।

बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

श्रीराम लला मन्दिर के रंग मंडप का शिखर बनकर तैयार 11 जनवरी को प्रतिष्ठा द्वादशी की तैयारियां तेज

संवाददाता–अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माण कार्य के पांच मंडपों में से एक रंग मंडप का शिखर पूर्ण रूप से बनकर तैयार हो गया है। आज से ठीक एक माह बाद 11 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा की वर्षगांठ प्रतिष्ठा द्वादशी समारोह पूर्वक मनाई जाएगी। इसकी सम्पूर्ण रूपरेखा तैयार करने के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र की ओर से चार सदस्यीय समिति गठित की गई है। इसी के द्वारा सब कुछ तय किया जाना है। उल्लेखनीय है कि सप्तऋषि मन्दिर, परकोटे के साथ बनने वाले शिव, सूर्य, मां दुर्गा, देवी अन्नपूर्णा गणेश और हनुमानजी आदि के मन्दिरों के निर्माण में भी तेजी आई है। बीते दिनों निर्माण समिति के चेयरमैन नृपेन्द्र मिश्र की समीक्षा बैठक के उपरान्त मजदूरों की संख्या में वृद्धि की गई थी।

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य डॉ. अनिल मिश्र ने बताया कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी 2024 को जिस तिथि पर हुई थी, उस दिन द्वादशी तिथि थी। हिंदू तिथि के अनुसार इस बार द्वादशी तिथि 11 जनवरी को पड़ रही है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ प्रतिष्ठा द्वादशी के रूप में मनाए जाने का निर्णय हुआ है।

तीन दिवसीय उत्सव में विभिन्न प्रकार के धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। दिन में कौन–कौन से उत्सव होंगे और रात में किन कार्यक्रमों का आयोजन होगा, इसकी रूपरेखा तैयार करने के लिए चार सदस्यीय टीम बनाई गई है। यह टीम उत्सव की रूपरेखा तैयार कर रही है। निश्चित रूप से रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ भव्य व ऐतिहासिक होगी। प्रतिष्ठा द्वादशी का आयोजन हर साल किया जाएगा।

हाईटेंशन लाइन की चपेट में आने से 2 युवक झुलसे, एक की मौत

संवाददाता–गोरखपुर। गोला थाना क्षेत्र के गोपालपुर इलाके में बुधवार की सुबह अचानक हादसा हो गया। गांव के दो युवक हाईटेंशन लाइन के संपर्क में आ गए। गंभीर रुप से दोनों झुलस गए। दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया, जहां एक की मौत हो गई। सूचना पाकर बिजली निगम की तरफ से आपूर्ति ठप कराई गई है। लोगों ने अंदेशा जताया कि घटनास्थल पर छत पर जाने वाली लोहे की सीढ़ी पर चढ़कर दोनों युवक छत पर जा रहे थे। इसी बीच सीढ़ी के ऊपर से जा रही हाईटेंशन लाइन के संपर्क में आ गए और हादसा हो गया। सूचना मिलते ही बिजली निगम ने भी हाईटेंशन लाइन की बिजली आपूर्ति बाधित करवाई। हालांकि, थोड़ी देर बाद फिर से सामान्य करवा दी।

चेक अनादर मामले में एक वर्ष कारावास की सजा

संवाददाता–संतकबीरनगर। संतकबीरनगर जिले में न्यायिक मजिस्ट्रेट भारती तायल की कोर्ट ने चेक अनादर होने के मामले में पाल मोटर्स गोरखपुर के प्रोपराइटर कृष्ण पाल यादव को दोष सिद्ध करार देते हुए एक वर्ष के साधारण कारावास की सजा सुनाई। कोर्ट ने आरोपी पर कुल 20 लाख दो हजार 440 रुपए के अर्थदण्ड का भी निर्णय दिया। अर्थदण्ड की धनराशि अदा न करने पर यह धनराशि आरोपी से भू–राजस्व के रूप में वसूल की जाएगी। अर्थदण्ड का भुगतान न करने के न्यायालय के आदेश की अवमानना स्वरूप आरोपी को तीन माह की अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट आदेश दिया कि अतिरिक्त साधारण कारावास की सजा भुगतने से आरोपी अर्थदण्ड की अदायगी से अवमुक्त नहीं होगा। अर्थदण्ड की धनराशि प्रत्येक स्थिति में वसूल की जाएगी।

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा दरख्वास्त हुसूल हुक्म मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश (आर्डर 9 कायदा 9) (2)

अदालत–श्रीमान सप्तम अति0 सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती

मुकदमा नम्बर–880/2015

प्रकीर्णवाद सं0–231/2022

श्रीमती झिनका देवी

बनाम

सनी सिंह आदि

1. सनि सिंह पुत्र दिनेश सिंह 2. दिनेश सिंह पुत्र श्याम नरायन सिंह 3. रवि सिंह पुत्र दिनेश सिंह साकिनान मौजा अमहट उर्फ बैरिहवा तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला बस्ती

तारीख पेशी 08–02–2025

हरगाह मुद्दई मजकुरूसदर ने इस अदालत में दरख्वास्त हुकूम मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश नाबुदा हस्ब हिदायत अदालत हाजा बतारीख माह सन ई0 पेश को है।

लिहाजा आपको इत्तिला दी जाती है कि आप इस अदालत में बतारीख 08 माह 02 सन 2025 या असालतन या बजरिये वकील अदालत हाजा या मुख्तार मजाज हस्ब जाप्ता और वाकिफ हाल मुकदमा में हाजिर होकर वजह (अगर कोई हो) जाहिर करें कि नाबुर्दा की दरख्वास्त क्यों न मन्जूर किया जाय।

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

नारी सुरक्षा, स्वावलंबन और सम्मान, ये शासन–प्रशासन की प्राथमिकता –डीएम

संवाददाता–गोरखपुर। जिलाधिकारी कृष्णा करुणेश ने कहा कि किसी भी समाज के समग्र विकास के लिए आधी आबादी का सशक्त होना जरूरी है। महिला सशक्तिकरण के लिए ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दिशानिर्देश पर वृहद स्तर पर मिशन शक्ति अभियान चलाया जा रहा है। वर्तमान में इस मिशन का पांचवां चरण संचालित हो रहा है। नारी सुरक्षा, स्वावलंबन और सम्मान शासन–प्रशासन की प्राथमिकता है और इसी के अनुरूप मिशन शक्ति का व्यावहारिक संदेश सभी महिलाओं तक पहुंचाया जा रहा है। जिलाधिकारी बुधवार को, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. गौरव ग्रोवर के साथ मिशन शक्ति विशेष अभियान फेज–5 के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, खेल, पुलिस कार्य, सामाजिक जागरूकता आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को वीरांगना सम्मान से सम्मानित कर रहे थे। कार्यक्रम के दौरान डीएम और एसएसपी ने मिशन शक्ति के हस्ताक्षर अभियान का भी शुभारंभ किया। जिलाधिकारी ने सम्मान प्राप्त करने वाली महिलाओं को बधाई देते हुए कहा कि आपके कार्य से अन्य लोगों को भी समाजहित में योगदान देने की प्रेरणा मिलेगी। इस अवसर पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. गौरव ग्रोवर ने मिशन शक्ति के उद्देश्यों को आधी आबादी के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि मिशन शक्ति ने समाज में महिला सशक्तिकरण को लेकर समाज में नव संदेश का संचार किया है।

यह अभियान समाज में जागरूकता और व्यापक बदलाव का वाहक बन रहा है। कार्यक्रम में एसपी क्राइम सुधीर जायसवाल, जिला समाज कल्याण अधिकारी वशिष्ठ नारायण सिंह, जिला प्रोबेशन अधिकारी समर बहादुर, जिला कार्यक्रम अधिकारी अभिनव मिश्रा आदि मौजूद रहे।

पूर्व महापौर डॉ. सत्या पांडेय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की प्रोफेसर एवं विश्वविद्यालय में एनसीसी हेड डॉ. विनीता पाठक, वन स्टॉप सेंटर गोरखपुर की परामर्शदाता गायत्री मणि त्रिपाठी, तिवारीपुर थाना की प्रभारी अर्चना, बैडमिंटन में तीन गोल्ड मेडल जीतने वाली आल इंडिया पुलिस टीम की आरक्षी नंदिनी यादव, नगर निगम पुलिस चौकी प्रभारी दीप मंजरी पांडेय, एआरटी सेंटर बीआरडी मेडिकल कॉलेज की सुजाता तिवारी, बीआरडी मेडिकल कॉलेज की स्टाफ नर्स प्रीति कन्नौजिया, समाज कल्याण विभाग की नव्या शुक्ला, बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग की इंदु पांडेय, वन स्टॉप सेंटर की पैरामेडिकल स्टाफ पूनम सिंह, अभ्युदय कोचिंग संचालिका डॉ. गुंजन पांडेय, वन स्टॉप सेंटर की कम्प्यूटर ऑपरेटर अनीता देवी, बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग ब्रह्मपुर ब्लॉक की मंशा वर्मा, अभ्युदय कोचिंग में योगदान देने समाज कल्याण विभाग की गौरी साहनी, आली संस्था की केस वर्कर शेख नुजहत, मार्ग संस्था की सन्नो राय, सामाजिक कार्यकर्ता समीक्षा व संगीता मिश्रा, अध्यापिका डॉ. अमृता गुप्ता, पिपराइच ब्लॉक में एएनएम कुसुम सिंह, खोराबार ब्लॉक में सीएचओ सुषमा सिंह, बाल विकास विभाग चरगांवा ब्लॉक की गीतांजलि मौर्य, ब्रह्मपुर ब्लॉक की जया मिश्रा और प्रतिभा सिंह को डीएम ले वीरांगना सम्मान से सम्मानित किया।

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब (आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

मूलवाद सं0–995/2023

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती

सिद्धू

बनाम

मस्तराम

1. मस्तराम उम्र करीब 50 वर्ष पुत्र राम अभिलाख ग्राम हरिबंशपुर तप्पा परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

तारीख पेशी 07–02–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 07 माह 02 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**

संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय– चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय– आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय– इलाहीबाग गोरखपुर।

मो09450567450 9336715406,

ई.मेल**bhartiyabasti@yahoo.com**

bhartiyabasti@gmail.com